# शिक्षक

## संगीत

प्रथम भाग

किरण कुमार मुखोपाध्याय, ( नीलू बाबू )

पुस्तक मिलने का पता:—

किरणकुमार मुखोपाध्याय

( नीलू बाबू )

यूनीवरसिटी रोड, इलाहाबाद ।

किरणकुमार मुखोपाध्याय ( नीलू बाबू )

Recipient of Gold Medals at the All India Music Conference held at Lucknow in 1925, & at the Shaharanpore Music Conference held in 1928.

THE UNION JOB PRESS, KATRA, ALLAHABAD.

श्री १०८ हरिहर

शिक्षक

# संगीत-सार-संग्रह

## प्रथम भाग

परब्रह्म परमात्मा, तरिहैं भव के पार।
वे ही रखिहैं लाज मम, उरकरि प्रेम विचार॥

गान कला सो हीन हिय, समुझहु ऊसर ताहि।
प्रेम विटप कैसे उगे, उगे तहूँ जरि जाहि॥


लेखक और प्रकाशक

किरणकुमार मुखोपाध्याय

(नीलू-बाबू)।



All rights reserved.



तृतीय बार १००० ] • 1928. [ मूल्य १।)

डाक ख़र्च अलग

पुस्तक मिलने का पता :—

पं० प्यारेलाल गौड़

परफ्यूमर एन्ड बुकसेलर

कटरा, इलाहाबाद।

# भूमिका

प्रेम रुधिर मिलि अङ्ग बनो है, कोई न पायो पार।
बत्तीसों जिमि राख्यो हिय बिच, जीभहि दन्त सम्हार॥

प्रेम है वेदान्त का सिद्धान्त सिद्ध विचार से।
शुद्ध होता है हृदय सत्प्रेम के संचार से॥
प्रेम का क्या मर्म है सो सब समझ सकते नहीं।
प्रेम मिलता भी नहीं है, सब समय या सब कहीं॥
प्रेम ही सौन्दर्य्य है, सौन्दर्य्य ही बस स्वर्ग है।
देव दुर्लभ प्रेम ही से प्राप्य पद अपवर्ग है॥

[ लव् ब्लौसम्स ]

देखिये योग, यज्ञ, जप, और प्राणायाम, इत्यादि कोई भी साधना प्रेम रहित नहीं है। सब ही का अन्तिम उद्देश एक सा है अर्थात् एक चित्त होकर परमेश्वर से शुद्ध प्रेम करते हुये आत्मा को पुष्ट करना ही सबों का मुख्य उद्देश है। परन्तु वर्तमान समय में पूर्वोक्त विधि में से एक को भी प्रत्येक मनुष्य इस संसार के सकल कार्य्य करते हुये नहीं कर सकता। इसलिये हमारे पूर्व-पुरुषों ने सब से सरल और सुसाध्य साधना सोच निकाली है, इस साधना के द्वारा मनुष्य एकाग्रचित्त होकर परमेश्वर से शुद्ध प्रेम करता हुआ अपनी आत्मा को तल्लीन कर सकता है। वह साधना सामवेद सम्भूत हमारी परम प्रिय संगीत विद्या है इसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति बिना सन्देह के परम-पद को प्राप्त हो सकता है।

किसी समय भारत में संगीत का प्रचार घर २ में था। संध्या सवेरे सामगान से आकाश गूंज उठता था। भिन्न २ प्रकार के बाजों की मधुर ध्वनि देवताओं तक को खींच लाती थी, नदी ठहर जाती थी, पवन रुक जाता था, सब जड़ चैतन्य संगीत मंत्र के बश हो जाते थे। परन्तु समय परिवर्तनशील है। वह समय न रहा। अब संगीत का अभाव हो गया है। जहाँ लोग दीपक राग गा कर दिया जला देते थे वहाँ अब संगीत के टिमटिमाते दीप कोप्र

बुझाने को तैय्यार हैं। हाँ, इधर कुछ लोग अब चेतने लगे हैं। वे संगीत के महत्व को समझने लगे हैं। परन्तु संगीत की सीढ़ी पर चढ़ने के लिये उन्हें अनेक कठिनाइयाँ पड़ती हैं। उन्हें रास्ता दिखाने और सहारा देने की आवश्यक्ता है। इसी कठिनाई को दूर करने के लिये मैंने यह "**शिक्षक संगीत-सार-संग्रह**" नामक प्रवेशिका बनाई है।

मैंने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार सर्वसाधारण की सुबिधा के हेतु इसे सरल बनाने की चेष्टा की है और इसे समझने के लिये प्रश्नोत्तर के रूप में कर दिया है। यदि इस सेवा से म कुछ लोगों की संगीत की कठिनाई को दूर कर सका, तो मैं अपने को कृतकार्य समझूंगा। यदि कहीं किसी प्रकार की त्रुटि रह गई हो तो मैं उसके लिये क्षमा प्राथी हूँ।

इस कार्य में जिन जिन मित्रों ने मुझे उत्साहित किया है, उन्हें मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। विशेष कर श्रीयुत बाबू रामपरिच सिनहा, बी० ए०, एल० टी०, बाबू बेनीप्रसाद (रईस), बा० गुरु चरण जी, पं० अम्बादत्त पंथ, बी० एस-सी, बाबू सरयूप्रसाद, पं० जयदत्त त्रिपाठी, पं० हरिकृष्ण दीक्षित, श्रीयुत प्राणनाथ जुत्सी, बा० गुरुभगतसिंह (भक्त) बी० ए०; बाबू एम० एन० बैनर्जी; बी० ए०, एल० एल० बी०; पं० महावीरप्रसाद; पं० गोपालदत्त उप्रेती; बाबू डी० एन० कुन्डू; बाबू मोतीलाल; महाशय कशालकर जी (Music. Prof., K. P. College); महाशय लक्ष्मणप्रसाद जी (Music Prof. Saraswati Sangit Pathshala) प्रयाग का कृतज्ञ हूँ।

यूमिवरसिटी रोड
एलाहाबाद
ता० ६—३—१९१८।

किरणकुमार मुखोपाध्याय।
(नीलू बाबू)

# द्वितीय संस्करण की भूमिका

इस संग्रह की दूसरी आवृति आज मैं बड़े उत्साह के साथ निकाल रहा हूँ। पहली बार इस भय से इसकी ५०० प्रतियाँ ही छापी गई थी कि ऐसी पुस्तकों के प्रचार का समय देश में अभी नहीं आया। परन्तु इस प्रकार की धारणा के लिये मुझे लज्जित होना पड़ा। संगीत प्रेमियों ने इस पुस्तक का आदर किया और पहले संस्करण की सारी प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गईं।

इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण प्रकाशित करने की फिक्र मुझे बहुत समय से थी। परन्तु कागज और छपाई की मंहगाई के कारण इसके प्रकाशन में अधिक विलम्ब हो गया। इस पुस्तक की बिक्री तथा बराबर मांग जारी रहने के कारण मैं इसका दूसरा भाग भी प्रकाशित करने के प्रयत्न में हूँ। मालूम होता है कि संगीत प्रेमियों, को ऐसी पुस्तकें पसन्द हैं। अतएव शीघ्र ही मैं इसका दूसरा भाग भी लेकर उनकी सेवा में उपस्थित होऊँगा।

पहले संस्करण में भाषा तथा छपाई आदि की जो भूलें रह गई थीं उनका संशोधन यथा मति कर दिया गया है इस पर भी जो भूलें रह गई हों उन्हें पाठक कृपा पूर्वक सुधार कर पढ़लें।

मैंने अपने परम हित चिन्तक श्रीमान पंडित देवीदत्त शुक्ल सम्पादक "बालसखा" प्रयाग, और श्रीमान बाबू बेनीप्रसाद जी को हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि उक्त श्रीमान पंडित जी ने पहिले संस्करण के भूलों का संशोधन करने में और बाबू बेनी प्रसाद जी ने इस संस्करण के प्रूफ को पढ़ने में अपने बहुमूल्य समय दिये।

ता: २९—१०—१९२०

ग्रन्थकर्ता

# तृतीय संस्करण की प्रस्तावना

परमपिता जगदीश्वर की असीम अनुकंपा से आज हम संगीत-प्रेमियों की सेवा में 'शिक्षक-संगीत-सार-संग्रह (प्रथम भाग)' का तृतीय संस्करण लेकर सादर उपस्थित होते हैं। संग्रह का प्रथम और द्वितीय संस्करण अपनाकर कला प्रेमियों ने हमारा उत्साह बढ़ाया और अपनी गुणग्राहकता का प्रशंसनीय परिचय दिया है। इसके लिये हम उनके ऋणि हैं। संगीत-साहित्य की श्री-वृद्धि के निमित्त संग्रह के प्रथम और द्वितीय भाग-द्वारा हम जो तुच्छ प्रयत्न कर सके हैं वह संगीत-संसार अकरणीय गुण-ग्राहकता ही का द्योतक है। यदि संगीत-संसार की हमारे प्रति ऐसी ही कृपा बनी रही तो हम शीघ्र ही संग्रह के अन्य भाग भी प्रकाशित करने का प्रयत्न करेंगे।

यह अत्यन्त गर्व और हर्ष का विषय है कि हमारे संयुक्त प्रान्त में भी अन्य प्रान्तों की भाँति, संगीत-प्रेम पूर्णतया जागृत-हो गया है, और दिन प्रति दिन बढ़ रहा है। यह हमारे समुज्ज्वल भविष्य की उषा के समान है। क्योंकि जब किसी जाति के अच्छे दिन आने वाले होते हैं, तभी उसे अपनी ललित कलाओं से प्रेम उत्पन्न होता है, उषा की प्रथम रश्मि हमें सूचना दे देती है कि हम किस प्रकार के दिन की आशा करें। हम परम पिता से सविनय प्रार्थना करते हैं कि वे हमारी पिछड़ी हुई जाति को उन्नति के मार्ग पर उत्तरोत्तर अग्रसर करें।

अंत में हम संगीत-प्रेमियों को हार्दिक धन्यवाद देते हैं। एक विशेष-रूप से उल्लेखनीय विषय यह है कि हम ने इस संग्रह के दूसरे भाग में ठाठ-चक्र-द्वारा राग रागानयों के रूप विस्तीर्ण कर दिये हैं।

यूनिवरसिटी रोड,
इलाहाबाद
ता० १—१—१९२८।

ग्रंथ कर्त्ता

# सूचीपत्र।


| विषय | | | | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| भूमिका | ... | ... | ... | (क) |
| द्वितीय संसकरण की भूमिका | | ... | ... | (ख) |
| तृतीय ,, ,, ,, | | ... | ... | (ग) |
| स्वराध्याय | ... | ... | ... | १ |
| स्वरों के संख्या, प्रकार, नाम और चिन्ह | | | ... | ३ |
| हारमोनियम चित्र नं० (१) | | ... | ... | ७ |
| अंकित स्वरों का चित्र काट कर हारमोनियम के परदों पर लगाने के लिये | | ... | ... | ७ |
| तालाध्याय | ... | ... | ... | ८ |
| ताल साधन | ... | ... | ... | १० |
| उपयोगी चिन्ह | ... | ... | ... | १४ |
| उपयोगी बातें | ... | ... | ... | १५ |
| स्वर साधन | ... | ... | ... | क १६ |
| रागाध्याय | ... | ... | ... | २० |
| राग रागिनियों के गाने का समय | | ... | ... | २१ |
| वर्तमान मत | ... | ... | ... | २३ |
| इमन कल्याण (चौताल) | | ... | ... | २५ |
| राग साधन | ... | ... | ... | २५ |
| राग हिंडोल (चौताल) | | ... | ... | २७ |
| राग मारवा (तिताला) | | ... | ... | २८ |
| गौड़ सारंग ( ,, ) | | ... | ... | ३० |
| रागिनी बिलावल (झपताल) | | ... | ... | ३१ |
| राग मालकोश (चौताल) | | ... | ... | ३३ |
| रागिनी भूपाली (धमार) | | ... | ... | ३४ |
| वृन्दावनी सारंग (तिताला) | | ... | ... | ३६ |

| विषय | | | | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| राग हमीर (तिताला) | | ... | ... | ३७ |
| सोरठ (तिताला) | | ... | ... | ३९ |
| भजन ( ,, ) | ... | ... | ... | ४० |
| खंमाज ( ,, ) | ... | ... | ... | ४२ |
| काफी ( ,, ) | ... | ... | ... | ४३ |
| रागिनी भैरवी (रुपक) | | ... | ... | ४५ |
| बरोवां पीलू (तिताला) | | ... | ... | ४६ |
| केदारा (तिताला) | ... | ... | ... | ४८ |
| केदारा चाँदनी (चौताल) | | ... | ... | ४९ |
| पूर्वी तिताला) | ... | ... | ... | ५१ |
| देश (तिताला) | ... | ... | ... | ५२ |
| दरबारी कान्हेड़ा (तिताला) | | ... | ... | ५३ |
| शहाना (झपताल) | ... | ... | ... | ५५ |
| बागेश्री (तिताला) | ... | ... | ... | ५६ |
| भीम पलासो (झपताल) | | ... | ... | ५७ |
| कान्हेड़ा (एकताला) | | ... | ... | ५८ |
| छाया ... | ... | ... | ... | ६० |
| सारंग (कहरवा) | ... | ... | ... | ६१ |
| झिझौटी (ठुमरी) | ... | ... | ... | ६३ |
| धुनि रामायण (जलद कहरवा) | | ... | ... | ६४ |
| भजन दादरा | ... | ... | ... | ६५ |
| थियेटर (दादरा) | ... | ... | ... | ६७ |
| गज़ल (कौवाली) | ... | ... | ... | ७० |
| भजन (ठुमरी) | ... | ... | ... | ७१ |
| गत इमन कल्यान (तिताला) | | ... | ... | ७२ |
| The National Anthem. राजभक्ति भजन | | | ... | ७३ |


नोट—जिन विषयों के नीचे लकीर है उन्हें ध्यान पूर्वक पढ़ना चाहिये।

# स्वराध्याय

शिष्य—संगीत किसे कहते हैं ?

दोहा

गुरु—गीत वाद्य, अरु नृत्य को कह्यो नाम संगीत ।
तानसेन, सुमतंग मुनि, भरत मतेहो थीत ॥

संगीत, अर्थात् गीत के संग बाजे में जो जो काम होता रहता है उन सब कामों के एक साथ होने को संगीत कहते हैं। और बाजे में अलग अलग काम के होने को संगत कहते हैं।

शि०- गीत किसे कहते हैं ?

गु०—जो पद स्वर के साथ लय से गाया जाता है और सुनने में मधुर और प्रिय मालूम होता है उसे गीत कहते हैं। हर एक गीत में निम्न लिखित चार बातें अवश्य होती हैं।

(१) सम—अर्थात् जहाँ लय का विश्राम होता है या जिस स्थान में यह प्रकाश होता है वहाँ संगीत-जानकारों के शिर हिल जाते हैं या वे "हाँ" कह देते हैं।

(२) अङ्ग, यथा स्थाई, अन्तरा, संचारी, और आभोग इन चार अङ्गों में से कम से कम स्थाई और अन्तरा अवश्य होते हैं ॥

(३) राग और रागिनी ।

(४) ताल ।

शि०—पद किसे कहते हैं ?

गु०—पद शब्दों के बोल को कहते हैं जो कि **मात्राओं** से बँधे होते हैं। हर एक गीत में कम से कम दो पद अवश्य होते हैं ?

शि०—लय किसे कहते हैं ?

गु०—कोई **ताल** स्थापित करके बराबर उसी ताल के मात्राओं के वज़न से गाने या बजाने को लय कहते हैं। इसके तीन भेद हैं :—

(१) द्रुतलय—दुगून में गाने व बजाने को कहते हैं।
(२) मध्यलय—साधारण रीति से गानेबजाने को कहते हैं।
(३) विलम्बितलय—बहुत ठाह की चाल से गाने बजाने को कहते हैं।

शि०—स्वर किसे कहते हैं ?

गु०—वह शब्द जो कि किसी के गले से, या किसी वस्तु पर आघात या घर्षण करने से निकलता है स्वर कहलाता है। इस प्रकार के भिन्न २ स्वर २२ प्रकार के हैं, जिन में से हारमोनियमरूपादि बाजों पर संङ्गीत शास्त्रकारों ने दो **अचल**, पाँच **चल**, अर्थात् सात शुद्ध स्वर और पाँच **अंशित** अर्थात् विशुद्ध स्वरों के चिन्हों को सङ्गीत विद्या के वर्ण ( Alphabet ) माने हैं, और इन्हीं बारह स्वरों से राग, रागिनी, गीत, गत, तराना और सरगम इत्यादि बने हैं।

, अचल और अंशित स्वर किसे कहते हैं ?

गु०—(१) जिस स्वर का अंश हो सकता है उसे **चल** स्वर कहते हैं। (२) जिस स्वर का अंश नहीं होता उसे **अचल** स्वर कहते हैं।

(३) वह स्वर जो किसी शुद्ध स्वर का अंश रखता हो **अंशित** या **विशुद्ध** स्वर कहलाता है।

# स्वरों के

| संख्या | प्रकार | नाम | चिन्ह |
|---|---|---|---|
| १-१३-२५-३७ | अचल | षड्ज (शुद्ध) | स |
| २-१४-२६ | अंशित | ऋषभ (कोमल) | रेक |
| ३-१५-२७ | चल | ,, (शुद्ध) | रे |
| ४-१६-२८ | अंशित | गन्धार (कोमल) | गक |
| ५-१७-२९ | चल | ,, (शुद्ध) | ग |
| ६-१८-३० | चल | मध्यम (शुद्ध) | म |
| ७-१९-३१ | अंशित | ,, (तीव्र) | मत |
| ८-२०-३२ | अचल | पंचम (शुद्ध) | प |
| ९-२१-३३ | अंशित | धैवत (कोमल) | धक |
| १०-२२-३४ | चल | ,, (शुद्ध) | ध |
| ११-२३-३५ | अंशित | निषाद (कोमल) | निक |
| १२-२४-३६ | चल | ,, (शुद्ध) | नि |

इन्हीं ऊपर लिखे हुए बारह स्वरों के समूह को एक सप्तक कहते हैं। और इन्हीं बारह स्वरों के निकलने का सम्बन्ध मनुष्य के शरीर और सम्पूर्ण स्वर वाले बाजों में भिन्न भिन्न तीन स्थानों से भिन्न भिन्न तीन प्रकार के हैं।

| मनुष्यों के शरीर में | प्रकार | सम्पूर्ण स्वर वाले बाजों में |
|---|---|---|
| स्थान | स्वर | स्थान |
| (१) उदर से | मोटा स्वर | प्रथम या अनुदित सप्तक से |
| (२) कंठ से | साधारण स्वर | द्वितीय या स्वरादित सप्तक से |
| (३) मस्तक से | ऊँचा अर्थात् चिल्लाने का स्वर। | तृतीय या उदित सप्तक से |

नोट—प्रथम या अनुदित सप्तक को मन्द्र, षरज, षाद या उदारा की सप्तक भी कहते हैं।

द्वितीय या स्वरादित सप्तक को मुदारा, मध्य या मध्यम सप्तक भी कहते हैं।

तृतीय या उदित सप्तक को तारा, उच्च, तार, अथवा पंचम सप्तक भी कहते हैं।

शि०—सीखने के लिये बाजों में सब से सरल बाजा कौन है ?

गु०—सीखने के लिये सब से सरल बाजा हारमोनियम है परन्तु इस में राग रागिनी का प्रकाश अच्छी भाँति नहीं हो सकता, क्योंकि इस बाजे से **श्रुति** और **मीड़** आदि नहीं निकल सकते।

शि०—**श्रुति** व **मीड़** इत्यादि किस बाजे से निकल सकते हैं ?

गु०—सितार, एसराज आदि कोई तार वाले बाजों से **मीड़** और **श्रुति** अच्छी तरह निकल सकती हैं।

शि०—**मीड़** व **श्रुति** किसे कहते हैं ?

गु०—किसी नियत स्वर वाले परदे पर के तार को खींच कर उसी परदे से दूसरे परदे के स्वर के उत्पन्न होने को मीड़ कहते हैं। कोई चल स्वर के चौथाई भाग को श्रुति कहते हैं, जो कि हारमोनियम में नहीं होता क्योंकि हारमोनियम में केवल स्वर के दोही भाग तक रक्खे गये हैं।

शि०—हारमोनियम किस प्रकार से बजाया जाता है ?

गु०—प्रथम छिद्र मोचक ( स्टापर ) जोकि हर एक हाथ वाले अर्थात् बक्स हारमोनियम के सामने की ओर तीन या चार होते हैं, कम से कम एक को अवश्य अपनी तरफ बाहर की ओर एक इञ्च तक खींच लेना चाहिये। फिर एक धौंकनी

जोकि बाजे के पीछे की ओर एक पीतल या लोहे की पत्ती से अटकी रहती है, खोल कर किसी परदे को जोकि गिन्ती में प्राय: १५ काले और २२ सफेद होते हैं अंगुली से दबाकर धौंकना चाहिये। जिसके धौंकने से हारमोनियम बजता रहेगा। परन्तु यह अवश्य ध्यान रहे कि अंगुली से कोई परदा बिना दबाये धौंकनी को कभी न धौंकना चाहिये, क्योंकि ऐसा करने से धौंकनी फट जाती है, और बाजा बेकाम हो जाता है।

शि०—हारमोनियम से स्वर किस तरह पैदा होता है?

गु०—हारमोनियम के भीतर एक हवा दान (Reservoir) होता है जोकि छिद्र मोचकों से ढका रहता है। धौंकनी दबाने से धौंकनी की हवा आकर इसमें जमा होती है, फिर किसी छिद्र मोचक को बाहर से खींचकर खोल देने से, वह हवा जो अन्दर पीतल के एक सेट ३७ पिपिहिरियों में जिसे रीड कहते हैं, भरी रहती है और बाहर ३७ छिद्र जोकि भीतर के इन ३७ पिपिहिरियों की हवा निकलने के लिये ऊपर बने रहते हैं, और जो १५ काले और २२ सफेद परदों से ढके रहते हैं, इन परदों में से किसी एक को अंगुली से दबाने से निकल जाती है और फिर उसी परदे की पिपिहिरी बजने लगती है। अर्थात् हारमोनियम से स्वर पैदा होने लगता है।

शि०—हारमोनियम में ऊपर कहे हुए ३७ परदों में से किन परदों को स, रे, ग, म, प, ध, और नि, मानना चाहिये?

गु०—मैं प्रथम ही वर्णन कर चुका हूँ कि (सी) से (सी) तक वाले हारमोनियम के ३७ परदे तीन प्रकार के यथा मोटे, साधारण और ऊँचे स्वर के लिये तीन यथा अनुदित, स्वारादित और उदित के समक में विभाजित हैं। अर्थात्

एक २ सप्तक में सात शुद्ध और पाँच अंशित स्वरों के लिये बारह २ परदे होते हैं जिनके अङ्गरेजी नाम नीचे अंकित हैं:—

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| संख्या— | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| नाम— | सी | सीशार्प | डी | डीशार्प | ई | एफ |
| | C | C′ | D | D′ | E | F |
| संख्या— | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| नाम— | एफशार्प | जी | जीशार्प | ए | एशार्प | बी |
| | F′ | G | G′ | A | A′ | B |

इन्हीं बारह परदों के हर एक नाम पर से स, रे, ग, म, प, ध, नी, निकलने का स्थान अर्थात् स्वरग्राम १२ प्रकार से बने हैं।

यदि ( c ) सी परदे से, स, रे, ग, म, इत्यादि निकालना है, तो उसी परदे से लेकर हारमोनियम के शेष परदे तक, अर्थात् तीनों सप्तक के काले और सफेद परदों में से जिन २ परदों पर स, रे, ग, म, इत्यादि के ऊपर गिन्ती का ( १ ) का अंक लिखा हो, वही २ परदे सीग्राम के स्वरग्राम अर्थात् स, रे, ग, म, प, ध, और नि तीनों सप्तक में होंगे। इसी प्रकार यदि सीशार्प, अर्थात् दो काले परदों में से प्रथम काले परदे पर से स्वरग्राम मालूम करना है तो उस परदे से हारमोनियम के शेष परदे तक जिन २ परदों पर स, रे, ग, इत्यादि के ऊपर दो ( २ ) का अंक अंकित हो, वही २ परदे सीशार्प ग्राम के स्वरग्राम अर्थात् स, रे, ग, म, इत्यादि तीनों सप्तक में होंगे।

इसी प्रकार तीन अङ्क के आङ्कित वाले स्वर डी ग्राम के

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चार | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | डीशार्प | ,, | ,, |
| पाँच | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ई | ,, | ,, |
| छः | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | एफ | ,, | ,, |
| सात | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | एफशार्प | ,, | ,, |
| आठ | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | जी | ,, | ,, |
| नौ | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | जीशार्प | ,, | ,, |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दस | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ए | ,, | ,, |
| ग्यारह | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | एशार्प | ,, | ,, |
| बारह | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | बी | ,, | ,, |

स्वरग्राम अर्थात् स, रे, ग, म, इत्यादि तीनों सप्तक में होंगे। अब चित्र नं ( १ ) को देखने से सब विदित हो जायगा।

परन्तु हर एक व्यक्ति को अभ्यास के लिये हारमोनियम के १२ स्वरग्रामों में से ( जैसा कि चित्र नं० १ में दिखलाया गया है ) एक ख़ास स्वरग्राम को चुन लेना चाहिये जिससे कि वे एक स्वरग्राम के सब परदों को व्यवहार करते हुये अच्छी तरह ध्यान में चढ़ा सकें और अपने सुभीते के लिये चित्र नं० दो: के दिये हुये स्वरों को काट कर उसी ख़ास चुने हुये स्वरग्राम के नम्बरवार परदों पर गोंद या लेई से चिपका लें। परन्तु यह याद रहे कि अनुदित सप्तक के लिये १ से १२ तक, स्वरादित सप्तक के लिये १३ से २४ तक और उदित सप्तक के लिये २५ से ३७ तक परदे हैं।

शि०—स्वरग्राम निकालने के लिये कोई ऐसा सरल नियम बताइये जोकि बिना चित्रादि देखे निकल जाय।

गु०—बिना चित्रादि देखे स, रे, ग, म, इत्यादि तीनों सप्तकों में से निकालने का सरल रीति यह है कि जहाँ से निकालना हो उस परदे से १३ परदे गिनलो तो

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पहिला | स | | दूसरा कोमल | रे |
| तीसरा | रे | | चौथा कोमल | ग |
| पाँचवाँ | ग | | | |
| छटवाँ | म | | सातवाँ तीव्र | म |
| आठवाँ | प | | नवाँ कोमल | ध |
| दसवाँ | ध | | ग्यारहवाँ कोमल | नि |
| बारहवाँ | नि | | | |
| तेरहवाँ | सं | | | |

चढ़ा अर्थात् दूसरे सप्तक का "स" फिर होगा।

स्वरग्राम अर्थात् स, रे, ग, म, इत्यादि निकालने में अंशित स्वरों के परदे छोड़ कर केवल शुद्ध स्वरों के परदे बजाना चाहिये जिनके नम्बर जहाँ कहीं से आरम्भ किये जावें १, ३, ५, ६, ८, १०, १२, १३, यह शुद्ध स्वरों के परदे होंगे ।

और २, ४, ७, ९, ११ यह अंशित स्वर के परदे होंगे ।

# तालाध्याय

शि०—क्या हर एक व्यक्ति के लिये ताल जानना आवश्यक है ?

गु०—जैसे बिना व्याकरण के कोई भाषा शुद्ध नहीं हो सकती वैसे बिना ताल के कोई गाना भी शुद्ध नहीं हो सकता है । संगीत प्रवीण लोग ताल को **गान विद्या** का व्याकरण कहते हैं । इसलिये हर एक संगीत सीखने वाले को ताल जानना आवश्यक है । यदि तबला इत्यादि बाजों पर बजाना न सीख सकें तो कम से कम हाथ से ताल का प्रकाश करना अवश्य ही सीखना चाहिये । "ताल साधन" नामक पाठ में ताल सीखने की विधि बतलाने का यथाशक्ति प्रयत्न किया गया है ।

शि०—ताल किसे कहते हैं ?

गु०—परिमाणित समय के आघात को जोकि मात्राओं के समूह से बनता है, ताल कहते हैं । ताल से लय की रक्षा होती है और छन्द दरसता है ।

शि०—मात्रा क्या है ?

गु०—मात्रा भी परिमाणित समय है, जो बराबर १। एक सेहो एक बटा चार सेकैण्ड के होता है । एक मात्रा में उतना ही समय लगता है जितना आरोग्य मनुष्य की नाड़ी के एक बार आघात होने में, या मुख से गिन्ती का एक गिनने में । एक मात्रा में चार कलायें होती हैं । अर्थात् एक मात्रा काल में चार बार अंगुली पटक सकते हैं ।

# प्रथम या अनुदित सप्तक

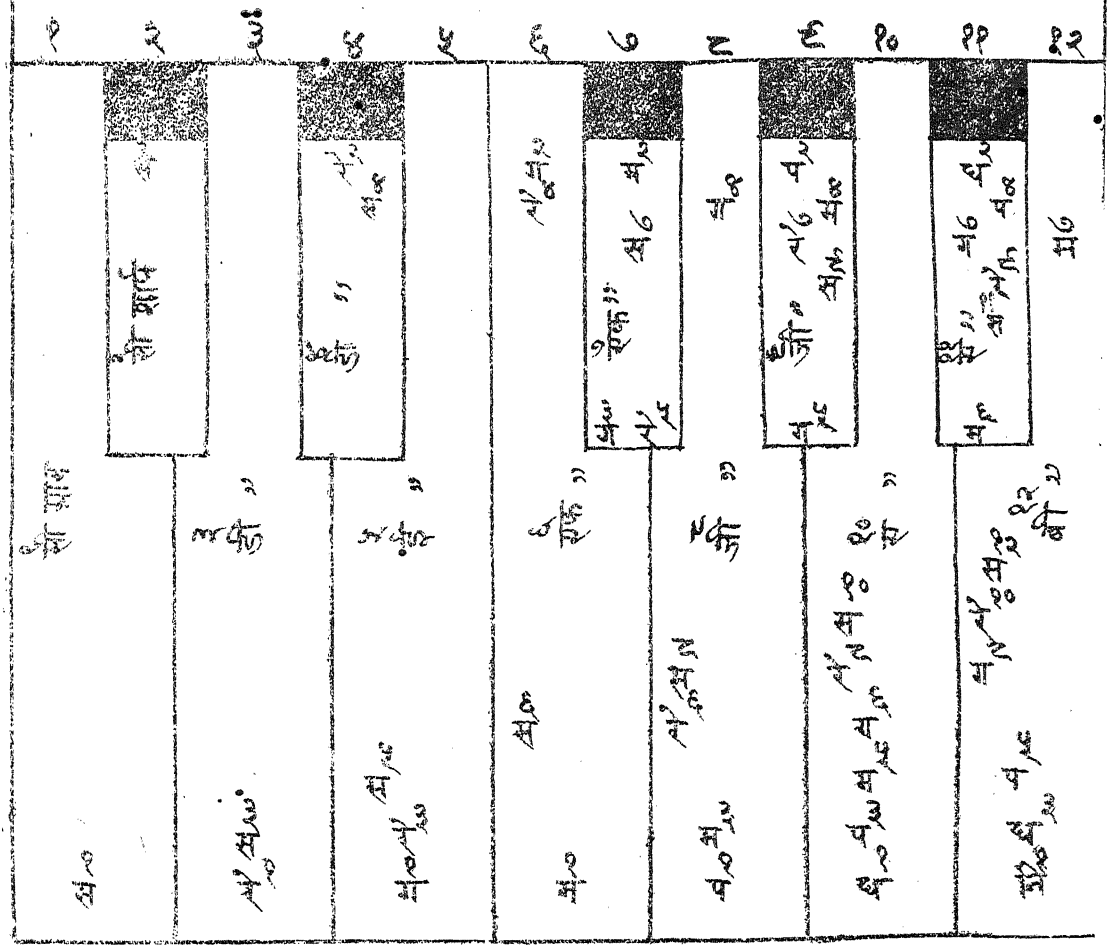

# चित्र नं० १

## स्वरादितया द्वितीय सप्तक

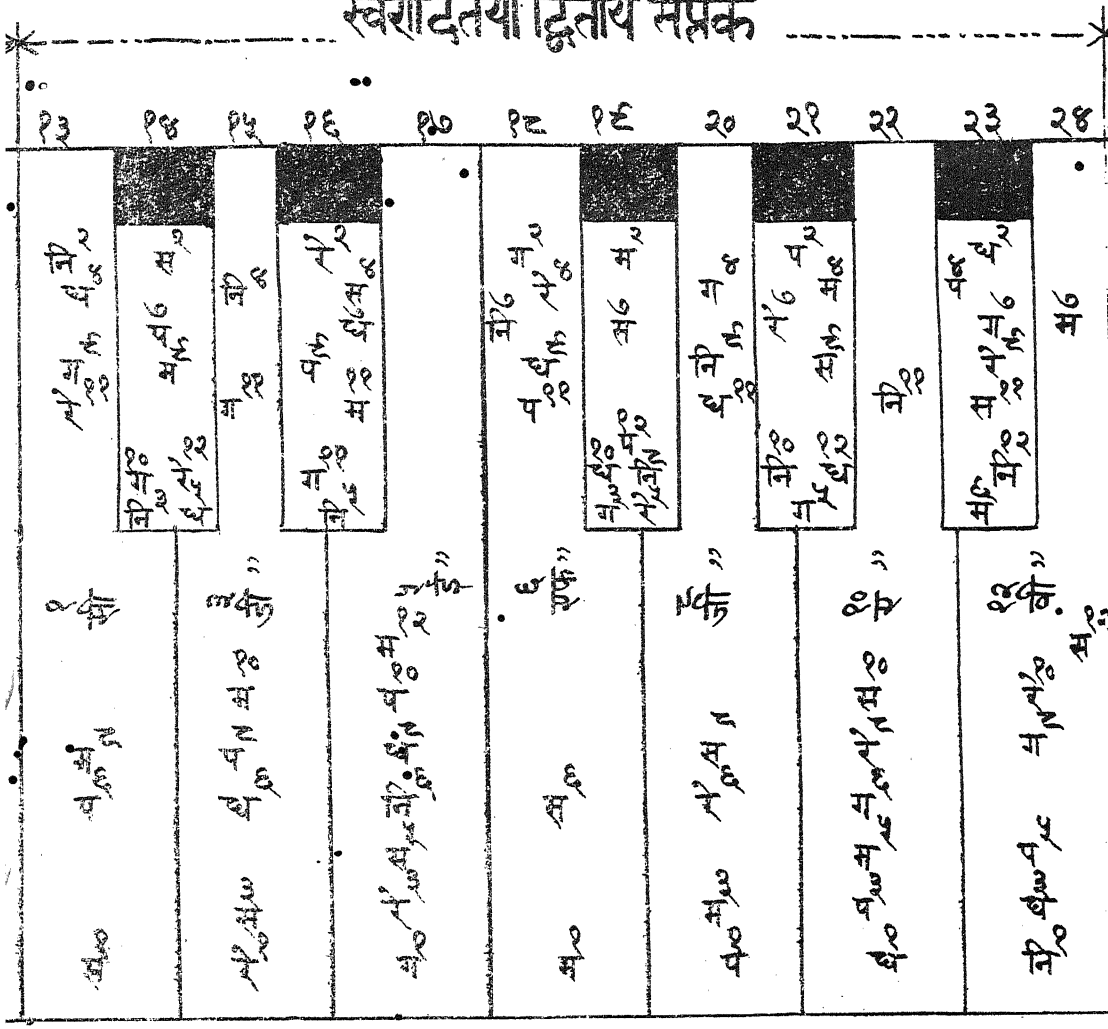

# तृतीय या उदित सप्तक

## अनुदित सप्तक

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स | क रे | रे | क ग | ग | म | त म | प | क ध | ध | क नि | नि |

## स्वरादित

| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स | क रे | रे | क ग | ग | म | त म | प | क ध | ध | क नि | नि |

## उदित

| २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स | क रे | रे | क ग | ग | म | त म | प | क ध | ध | क नि | नि | स |

शि०—कला किसे कहते हैं ?

गु०—कला भी समय का अंश है अर्थात् एक कला एक मात्रा का चौथाई भाग है।

शि०—ताल किस वस्तु से बनता है ?

गु०—ताल मात्राओं से बनता है, जो तबले के बोल में बंधे रहते हैं। इसी के आधार पर गाना बजाना होता है।

शि०—मात्रा किस वस्तु से बनती है ?

गु०—मात्रा कलाओं से बनती है।

शि०—कला किससे बनती है ?

गु०—कला मात्रा के चौथाई भाग काल से बनती है।

शि०—ताल का प्रकाश किस प्रकार से किया जाता है ?

गु०—ताल का प्रकाश दो प्रकार से किया जाता है। प्रथम किसी वस्तु, जैसे तबला, मृदंग, पखावज इत्यादि पर ताल का बोल बजा कर और दूसरे हाथ की ताली बजा कर, अथवा चुटकी बजाकर वा अंगुली फैला कर ताल का प्रकाश होता है।

शि०—ताल में और क्या २ वस्तुएं होती हैं ?

गु०—हर एक ताल में सम अवश्य होता है। और खाली व भरी तालें भी होती हैं, परन्तु अनेक ताल ऐसे हैं, जिन में सब भरी ही तालें होती हैं। खाली ताल कोई भी नहीं होती तिहाई, रेला, मोहड़ा इत्यादि भी होते हैं जिसे तबला, मृदङ्ग इत्यादि बजाने वाले केवल ताल की सुन्दरता बढ़ाने के लिये बजाते हैं।

शि०—सम किसे कहते हैं ?

गु०—अन्त में लय के विश्राम स्थान को सम, या न्यास, या अवसान कहते हैं। गीत के सम और सम के ताल का प्रकाश एक ही साथ होता है ?

शि०—ताल कितने प्रकार के होते हैं ?

गु०—ताल अनेक प्रकार के होते हैं, परन्तु प्रचलित ताल यह हैं। यथा तृताल ( तिताला ), चौताल, झपताल, रूपकताल, शूलफाक ताल, धमार, तेवरा, एकताला, दीपचन्दी या होली का ठेका, आड़ा चौताल, कौवाली, दादरा और कहरवा इत्यादि। उपरोक्त तालें भिन्न २ मात्राओं के समूह से बने हैं।

# ताल-साधन

शि०—हाथ से ताल प्रकाश करने का नियम क्या है?

गु०—हाथ से ताल प्रकाश करने का नियम यह है कि नीचे लिखे हुए भिन्न २ ताल चक्र में जितने मात्राओं के अङ्क हों उतने ही अङ्कों को एक लय से उच्चारण करते हुए जिस अङ्क पर सम या ताल लिखा हो ठीक उसी अङ्क के उच्चारण होने पर ताली बजाना चाहिये, और फिर जिस अङ्क पर ख़ाली लिखा हो ठीक उसी अङ्क के उच्चारण होने पर हाथ से ख़ाली ताल का इशारा करने के लिये दोनों हाथों को हटा देना चाहिये। परन्तु यह याद रहे कि कोई गीत या गत के साथ हाथ से ताल को प्रकाश करने में गीत या गत का सम जहाँ मालूम हो ठीक उसी स्थान से सम के ताल वाली ताली बजा कर आरम्भ करना चाहिये। तबले के बोल बजाने के लिये नीचे ताल-चक्र में जो बोल लिखे हैं उन्हें अभ्यास करना चाहिये।

**तृताल (तिताला) १६ मात्राओं के समूह से बना है।**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धमार, तेवरा<br>आड़ा चौताला और<br>होली का ठेका | १४ | " | " | " |
| चौताल और<br>इकताला | १२ | " | " | " |

| | | |
|---|---|---|
| शूल फांक और झपताल | १० | मात्रा के समूह से बना है। |
| कौवाली | ८ | " " " " |
| दादरा | ६ | " " " " |
| रूपक ताल | ७ | " " " " |

अब हम पूर्वोक्त तालों के बोल मात्राओं सहित नीचे लिखते हैं।

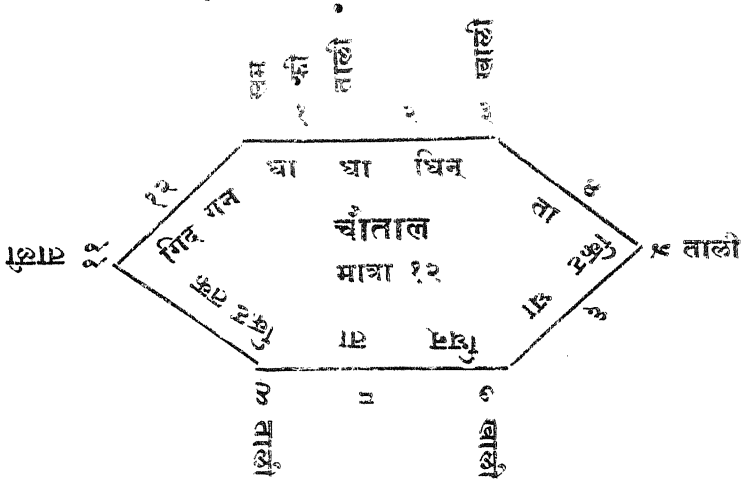


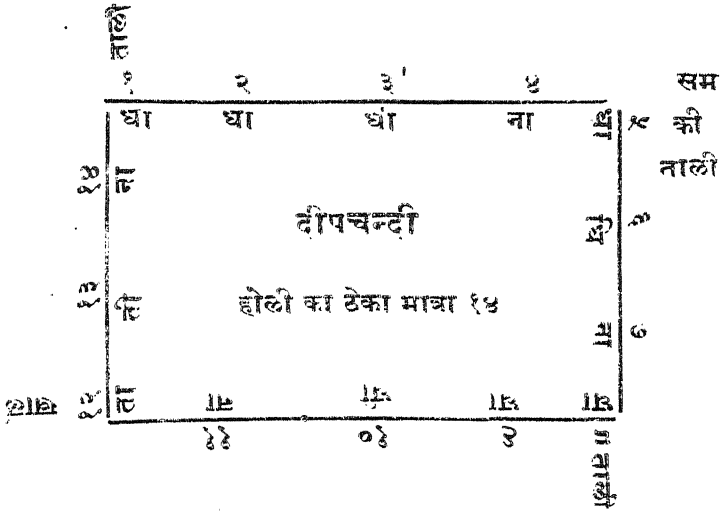

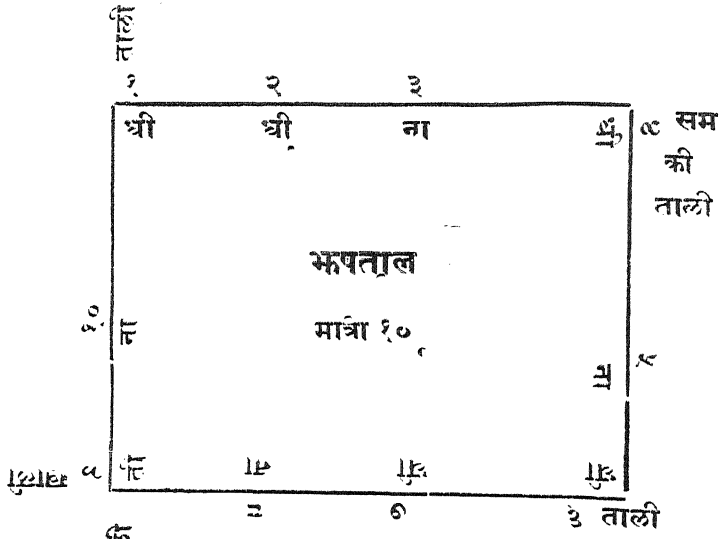
ताली
१ २ ३
धी धी ना धिं
९ सम की ताली
झपताल
मात्रा १०
१० ना
९ ना
९ खाली
ति ति ना धिं
८ ७ ६ ५ ताली

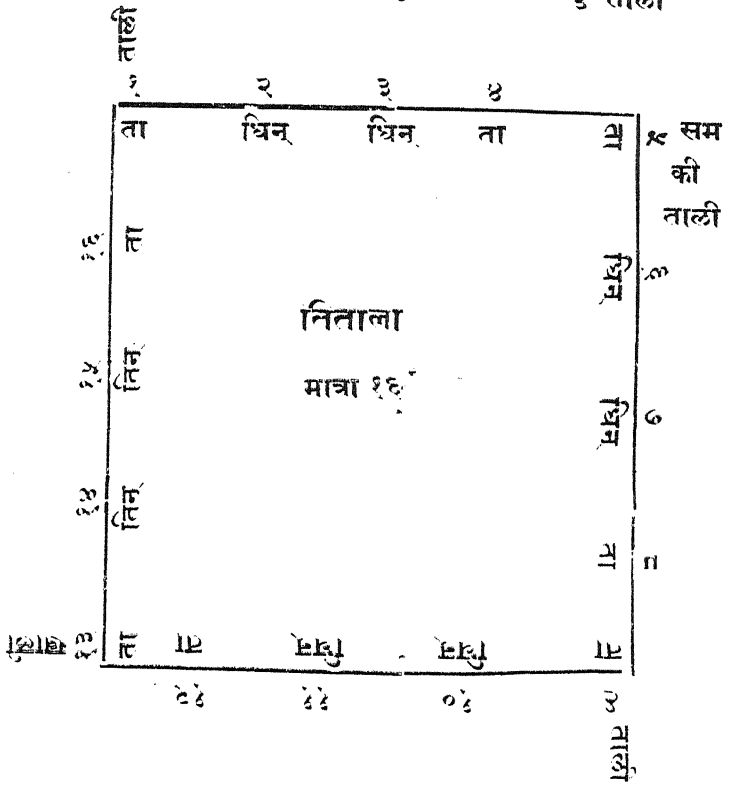
ताली
१ २ ३ ४
ता धिन् धिन् ता धा
१ सम की ताली
तिताला
मात्रा १६
१६ ता
१५ तिन्
१४ तिन्
१३ खाली
ता ता तिन् तिन्
धिं धिं
९ धिं धिं
८ ना
७ ना
१६ १५ १४ १३ ताली

# धमार मात्रा १४

सम

ताल—१ २ ०

मात्रा— १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४

बोल— क धि नि धि नि धा (आ) क ढि टि ढि टि ता (आ)

# तेवरा. मात्रा १४

सम

ताल— १ २ ३ ४ ५ ६

मात्रा— १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४

बोल— धि न धि न ता कि टि धि न धि न धा कि टि

# आड़ा चौताल मात्रा १४

सम खाली खाली खाली

ताल— १ २ ३ ४ ५ ६ ७

मात्रा— १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४

बोल— धी धी ना तृक तू ना कत्ती ना धी ना धी धी ना

# इकताला मात्रा १२

सम

ताल— १ २ ३

मात्रा— १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२

बोल— धी तृक धी ना धी धी ना तृक तू ना कत ता

# सूलफांक ताल मात्रा १०

सम खाली खाली

ताल— १ २० ३ ४ ५

मात्रा— १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

बोल— धा धा धि ता किट धा तिर किट गिद गिन

# दादरा मात्रा ६

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ताल— | सम | | | खाली | | |
| मात्रा— | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| बोल— | धा | ति | ना | ना | ति | ना |

# कौवाली मात्रा ८

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | सम | | | | खाली | | | |
| ताल— | १ | | | २ | | ३ | | ४ |
| मात्रा— | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
| बोल— | धा | गि | न | धि | न | क | धि | न |

नोट—इस ठेके के दुगून को कहरवा कहते हैं, २ और ४ पर ज़ोर से ताल देते हैं।

# उपयोगी चिन्ह

चिन्ह

(–) यह चिन्ह ठहरने का है। अर्थात् यदि किसी स्वर के आगे – यह चिन्ह एक या एक से अधिक हो तो उस परदे पर उतने ही मात्रा काल तक ठहरना चाहिये जितने कि यह – चिन्ह गिन्ती में हों जैसे स –, ग– –, म – – –, जोकि बराबर हुये स स, ग ग ग, और म म म म, के। परन्तु स स दोबार, ग ग ग, तीन बार और म म म म चार बार न बजाकर बरन स, पर एक मात्रा काल, ग पर दो मात्रा काल और म पर तीन मात्रा काल तक और ठहरना चाहिये। यही चिन्ह यदि किसी गीत के अक्षर के आगे तथा किसी स्वर के नीचे हो, तो वह अक्षर जो कि किसी स्वर के अन्त में होता है केवल उसी अक्षर के अन्त के स्वर का उच्चारण होगा।

जैसे (१) स रे ग म प ध = स रे ग म प ध
मी — ठी बो — ली = मी इ ठी बो ओ ली

(२) { स रे ग म प ध नि ध प म रे ग
मे — री — ह द य दे — — — बी

= { स रे ग म प ध नि ध प म रे ग
मे ए री ई ह द य दे ए ए ए बी

(×) जहाँ (×) यह चिन्ह हो वहां सम का ताल समझना चाहिये।

(०) जहाँ (०) यह चिन्ह हो वहाँ खाली ताल. और जहाँ १, २, ३, लिखे हों वहाँ भरी तालें समझना चाहिये।

— जितने स्वर — इस चिन्ह के भीतर हों उन को शीघ्र और एक साथ बजाना चाहिये।

# उपयोगी बातें

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कोमल | रे | का | चिन्ह | (रे$^{क}$) | है |
| ,, | ग | ,, | ,, | (ग$^{क}$) | ,, |
| ,, | ध | ,, | ,, | (ध$^{क}$) | ,, |
| ,, | नी | ,, | ,, | (नी$^{क}$) | ,, |
| तीव्र | म | ,, | ,, | (म$^{त}$) | ,, |

जिन स्वरों के आगे कोई ठहरने का चिन्ह न हो उन स्वरों पर कभी एक मात्राकाल से अधिक देर कदापि न ठहरना चाहिये। इसका ध्यान सर्वदा रखना चाहिये। क्योंकि यदि कहीं एक मात्रा काल से अधिक समय लग जाय, तो वह स्वर तुरन्त बेताला हो जायगा। इस लिये कि सब गीत व गत इत्यादि बंधे हुये ताल के मात्राओं से बनते हैं। यदि कहीं एक मात्रा भी कम बेशी हो जाय तो वह गत या गीत कदापि उस ताल में नहीं आ सकता जिस ताल में वह गत या गीत बंधा होता है।

हारमोनियम में जहाँ कहीं से स, रे, ग, म, इत्यादि बजाया जाय तो पहिला अर्थात् गिन्ती में १, १३, २५ और ३७ परदे स : २, १४ और २६ परदे कोमल रे : ३, १५ और २७ रे शुद्ध : ४, १६ और २८ कोमल ग : ५, १७ और २९ ग शुद्ध : ६, १८ और ३० म शुद्ध : ७, १९ और ३१ तीव्र म : ८, २० और ३२ प शुद्ध : ९, २१ और ३३ कोमल ध : १०, २२ और २४ ध शुद्ध : ११, २३ और ३५ नि कोमल : १२, २४ और ३६ नि शुद्ध होंगे ।

यदि कोई दो या तीन स्वर एकही मात्रा में लिखे हों तो तुरन्त एक साथ एक मात्रा काल में बजाना चाहिये ।

ध्रुपद कोई राग या रागिनी का नाम नहीं है, किन्तु जो गाने चौताल ताल में बंधे होते हैं उन्हें ध्रुपद कहते हैं ।

जब कभी गीत या गत को गा कर या बजा कर शेष करना हो तब स्थाई के सम पर आ कर शेष करना चाहिये ।

मोटे स्वर से ऊँचे स्वर तक जाने को **अनुलोम** या **आरोह** कहते हैं, जैसे स, रे, ग म, प, ध, नि, स इत्यादि और ऊंचे स्वर से मोटे स्वर तक लौट आने को **विलोम** या **अवरोह** कहते हैं जैसे स, नि, ध, प, म, ग, रे, स इत्यादि ।

अंगूठे को कभी काले परदे पर न लगाना चाहिये, यह विचार कर जिस प्रकार सुविधा हो शेष तीनों अंगुलियों का व्यवहार करना चाहिये ।

गीत या गत इत्यादि सर्वदा स्वरादित अर्थात् दूसरे सप्तक से कोई परदे को प्रस्थान सुर अर्थात् स मान कर बजाना चाहिये क्योंकि गाने और बजाने में प्रथम अर्थात् अनुदित और द्वितीय अर्थात् उदित सप्तक के परदे भी लगते हैं और गाने वाले भी सदा अपने साधारण स्वर से गाते हैं जोकि स्वरादित सप्तक से निकलते हैं ।

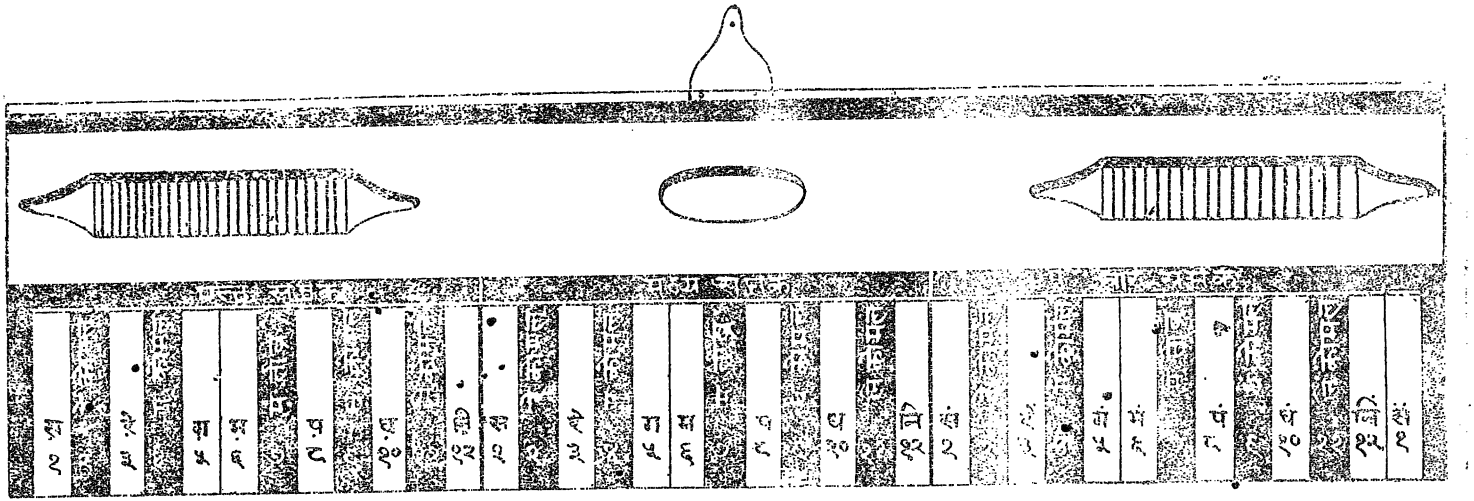

## उपयोगी नोट

१—जिस स्वर के नीचे बिन्दी हो उसको मंद्र या अनुदित सप्तक के स्वर समझना चाहिये।

२—जिस स्वर के ऊपर या नीचे कहीं भी बिन्दी न हो उसे मध्य या स्वरादित सप्तक के स्वर समझना चाहिये।

३—जिस स्वर के ऊपर बिन्दी हो उसे तार या उदित सप्तक के स्वर समझना चाहिये।

स़ रे़क रे़ ग़क ग़ म़ म़त प़ ध़क ध़ नि़क नि़ ☞ यह मन्द्र, अनुदित या प्रथम सप्तक के स्वर हैं

स रेक रे गक ग म मत प धक ध निक नि ☞ यह मध्य, स्वरादित या द्वितीय सप्तक के स्वर हैं

सं रेंक रें गंक गं मं मंत पं धंक धं निंक निं ☞ यह तार, उदित या तृतीय सप्तक के स्वर हैं

# स्वर साधन

## प्रथम पाठ

१ { स, रे, ग, म, प, ध, नि, सं–आरोहन
  { सं, नि, ध, प, म, ग, रे, स–अवरोहन

२ { सरे, रेग, गम, मप, पध, धनि, निसं–आरोहन
  { संनि, निध, धप, पम, मग, गरे, रेस–अवरोहन

३ { सरेग रेगम, गमप, मपध, पधनि, धनिसं–आरोहन
  { संनिध, निधप, धमप, पमग, मगरे, गरेस–अवरोहन

४ { सरेगम, रेगमप, गमपध, मपधनि, पधनिसं–आरोहन
  { संनिधप, निधपम, धपमग, पमगरे, मगरेस–अवरोहन

५ { सरेगमप, रेगमपध, ममपधनि, मपधनिसं–आरोहन
  { संनिधपम, निधपमग, धपमगरे, पमगरेस–अवरोहन

६ { सरेगमपध, रेगमपधनि, गमपधनिसं– आरोहन
  { संनिधपमग, निधपमगरे, धपमगरेस– अवरोहन

७ { सरेगमपधनि, रेगमपधनिसं–आरोहन
  { संनिधपमगरे, निधपमगरेस–अवरोहन

८ { सरगमपधनिसं–आरोहन
  { संनिधपमगरेस–अवरोहन

ऊपर लिखे हुए सरगम के परदों पर केवल 'आ' का उच्चारण करते हुये बजाना चाहिये यथा:—

१ स, रे, ग, म, प, ध, नि, सं } आरोहन
आ, आ, आ, आ, आ, आ, आ, आ

सं, नि, ध, प, म, ग, रे, स } अवरोहन
आ, आ, आ, आ, आ, आ, आ, आ

२ सरे, रेग, गम, मप, पध, धनि, निसं } आरोहन
आआ, आआ आआ, आआ, आआ, आआ, आआ

संनि, निध, धप, पम, मग, गरे, रेस } अवरोहन
आआ, आआ आआ, आ.आ, आआ, आआ, आआ

---

नोट—इसी प्रकार जितने स्वर साधन के पाठ हैं प्रथम सब स्वरों के अक्षरों को कहते हुये अभ्यास करना चाहिये बाद को उन्हीं स्वरों के स्थान में 'आ' 'इ' 'उ' 'ए' और 'ओ' को केवल उच्चारण करते हुये अभ्यास करना चाहिये। क्योंकि आ, ई, ऊ, ए और 'ओ' इन्हीं पाँच अक्षरों में से किसी को गिटकिरी, या तान में प्रयोग करते हैं।

---

## दूसरा पाठ

१ स, ग, रे, म, ग, प, म, ध, प, नि, ध, सं—आरोहन
सं, ध, नि, प, ध, म, प, ग, म, रे, ग, स—अवरोहन

२ स, म, रे, प, ग, ध, म, नि, प, सं-आरोहन
सं, प, नि, म, ध, ग, प, रे, म, स-अवरोहन

३ स, प, रे, ध, ग, नि, म, सं—आरोहन
सं, म, नि, ग, ध, रे, प, स—अवरोहन

४ स, ध, रे, नि, ग, सं—आरोहन
सं ग, नि, रे, ध, स—अवरोहन

५ { स, नि, रे, सं—आरोहन
  { सं, रे, नि, स—अवरोहन

६ { स, सं—आरोहन
  { सं, स—अवरोहन

---

## तीसरा पाठ

स

सरे स

स रे ग रे स

स रे ग म ग रे स

स रे ग म प म ग रे स

स रे ग म प ध प म ग रे स

स रे ग म प ध नि ध प म ग रे स

स रे ग म प ध नि सं नि ध प म ग रे स

---

## चौथा पाठ

१ { सरेस, रेसरे, गरेग, रेगरे, गमग, मगम,
  { मपम, पमप, पधप, धपध, धनिध, निधनि,
  { निसंनि, संनिसं,

२ { संनिसं, निसंनि, निधनि, धनिध, धपध, पधप,
  { पमप, मपम, मगम, गमग, रेगरे, गरेग, रेसरे, सरेस,

# स्वर-साधन

## ठाठ अलैय्या।

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १३ | १५ | १७ | १८ | २० | २२ | २४ | २५ |
| आरोह– | स | रे | ग | म | प | ध | नि | स |
| | २५ | २४ | २२ | २० | १८ | १७ | १५ | १३ |
| अवरोह– | स | नि | ध | प | म | ग | रे | स |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १३ | १५ | १७ | १८ | २० | २२ | २४ | २५ |
| आरोह– | स | रे | ग | म | प | ध | नि | स |
| | भ | जो | म | न | ह | री | ना | म |
| | २५ | २४ | २२ | २० | १८ | १७ | १५ | १३ |
| अवरोह– | स | नि | ध | प | म | ग | रे | स |
| | त | जो | स | ब | मो | ह | का | म |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १३ | १५ | ७ | १८ | २० | २२ | २४ | २५ |
| आरोह– | सस | रेरे | गग | मम | पप | धध | निनि | सस |
| | २५ | २४ | २२ | २० | १८ | १७ | १५ | १३ |
| अवरोह– | सस | निनि | धध | पप | मम | गग | रेरे | सस |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १३ | १५ | १७ | ८ | २० | २२ | २४ | २५ |
| आरोह– | सस | रेरे | गग | मम | पप | धध | निनि | सस |
| | भ– | जो– | म– | न– | ह– | री– | ना– | म– |
| | २५ | २४ | २२ | २० | १८ | १७ | १५ | १३ |
| अवरोह– | सस | निनि | धध | पप | मम | गग | रेरे | सस |
| | त– | जो– | स– | ब– | मो– | ह– | का– | म– |

## ठाठ भैरवी

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १३ | १४ | १६ | १८ | २० | २१ | २३ | २५ |
| आरोह— | स | रे$^{क}$ | ग$^{क}$ | म | प | ध$^{क}$ | नि$^{क}$ | स |
| | २५ | २३ | २१ | २० | १८ | १६ | १४ | १३ |
| अवरोह— | स | नि$^{क}$ | ध$^{क}$ | प | म | ग$^{क}$ | रे$^{क}$ | स |
| | १३ | १४ | १६ | १८ | २० | २१ | २३ | २५ |
| आरोह— | स | रे$^{क}$ | ग$^{क}$ | म | प | ध$^{क}$ | नि$^{क}$ | स |
| | भ | ज | न | ओ | म | का | क | रो |
| | २५ | २३ | २१ | २० | १८ | १६ | १४ | १३ |
| अवरोह— | स | नि$^{क}$ | ध$^{क}$ | प | म | ग$^{क}$ | रे$^{क}$ | स |
| | भ | य | ज | ल | धि | को | त | गो |

## ठाठ भैरव

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १३ | १४ | १७ | १८ | २० | २१ | २४ | २५ |
| आरोह— | स | रे$^{क}$ | ग | म | प | ध$^{क}$ | नि | स |
| | स | त्त | गु | रु | द | त्त | दा | ता |
| | २५ | २४ | २१ | २० | १८ | १७ | १४ | १३ |
| अवरोह— | स | नि | ध$^{क}$ | प | म | ग | रे$^{क}$ | स |
| | प | ढ़ | ता | है | मैं | गा | तो | ताँ |

## ठाठ टोड़ी

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १२ | १३ | १६ | १९ | २० | २१ | २४ | २५ |
| आरोह— | नि | स | ग$^{क}$ | म$^{त}$ | प | ध$^{क}$ | नि | स |
| | मुह | तू | मी | ई | ठी | बों | ली | बोल |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | २५ | २४ | २१ | २० | १९ | २० | १६ | १४ | १३ |
| अवरोह— | स | नि | ध[क] | प | म[त] | प | ग[क] | रे[क] | स |
| | ते | रा | क्या | आ | ल | गे | गा | आ | मोल |

## ठाठ मारवा

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १२ | १४ | १७ | १९ | २२ | १९ | १७ | १४ | १३ |
| आरोह— | नि | रे[क] | ग | म[त] | ध | म[त] | ग | रे[क] | स |
| | चुप | रह | बस | कर | झट | पट | चल | दे | प |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १२ | १४ | १२ | १० | ७ | १० | १३ | १३ |
| अवरोह— | नि | रे[क] | नि | ध | म[त] | ध | स | स |
| | बक | बक | मत | कर | चल | हट | टल | दे |

## ठाठ इमन कल्याण

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | २२ | २० | १९ | २० | १७ | १५ | १२ | १५ | १३ |
| आरोह— | ध | प | म[त] | प | ग | रे | नि | रे | स |
| | रा | धा | कृष | ना | गो | बिं | दा | आ | आ |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १३ | १० | १३ | १५ | १७ | १५ | १२ | १५ | १३ |
| अवरोह— | स | ध | स | रे | ग | रे | नि | रे | स |
| | भ | जे | सो | आ | पा | वे | आ | नं | दा |

## ठाठ मालकोश

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | २१ | १८ | १६ | १३ | ११ | १३ | १८ |
| आरोह— | ध[क] | म | ग[क] | स | नि[क] | स | म |
| | मुह | तू | मी | ठी | बो | ली | बोल |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | २८ | २५ | २३ | २१ | १८ | १३ | १८ |
| अवरोह— | ग[क] | स | नि[क] | ध[क] | म | स | म |
| | ज्ञान | घट | का | पट | तू | ऊ | खोल |

बोल सहित, राग व रागिनियों के ठाठ में ऊपर जितने सरगम लिखे हुए हैं उन सब को अच्छे प्रकार गाकर अभ्यास कर लेना चाहिए।

नोट—यह बात फिर भी स्मरण कराई जाती है कि जिस परदे के आगे ठहरने का चिन्ह नहीं है वहाँ कभी न ठहरना चाहिये बल्कि एक ही चाल से बजाना चाहिये।

# रागाध्याय

शि०—राग या रागिनी किसे कहते हैं ?

गु०—जो ध्वनि तीनों सप्तकों में, ऊपर कहे हुये १२ स्वरों में से, षरज सहित, कम से कम कोई पाँच स्वरों और षरज सहित, अधिक से अधिक कोई दस स्वरों की हेरा-फेरी से बनती है, उसे राग या रागिनी कहते हैं। और ये आठ प्रकार के होते हैं :—

( १ ) जिस राग या रागिनी में केवल पाँच स्वरों की हेरा-फेरी हो उसे ओढ़व राग या रागिनी कहते हैं।

( २ ) जिस राग या रागिनी में केवल छः स्वरों की हेराफेरी हो उसे षाढ़व राग या रागिनी कहते हैं।

( ३ ) जिस राग या रागिनी में, सात या उससे अधिक स्वरों की हेरा-फेरी हो, उसे सम्पूर्ण राग या रागिनी कहते हैं।

( ४ ) जिस राग या रागिनी में, दो या अधिक दूसरे राग या रागिनी का मेल हो उसे संकीर्ण राग या रागिनी कहते हैं।

( ५ ) पाँच स्वर वाले राग या रागिनी के आरोह और अवरोह में केवल शुद्ध स्वर के स्थान पर अंशित, या अंशित स्वर के स्थान पर शुद्ध स्वर के बदल जाने पर बक्र ओढ़व राग या रागिनी बनते हैं।

इसी प्रकार से ( ६ ) बक्र षाढ़व, ( ७ ) बक्र सम्पूर्ण और ( ८ ) बक्र शंकीर्ण राग या रागिनी होते हैं।

शि०—राग या रागिनियाँ किन २ वस्तुओं से बने हैं ?

गु०—राग और रागिनियां निम्न लिखित चार वस्तुओं से बने हैं।

(१) बादी स्वर (२) संबादी स्वर (३) अनुवादी स्वर ( ४ ) विवादी स्वर।

शि०—बादी, संवादी, अनुवादी और बिवदी स्वर किसे कहते हैं ?

गु०—( १ ) जिस स्वर का प्रकाश किसी राग या रागिनी में अधिकतर होता है उसे बादी या मुख्य स्वर अथवा जान भी कहते हैं।

( २ ) जिस स्वर का प्रकाश किसी राग या रागिनी में बादी स्वर से कम होता है उसे संबादी स्वर कहते हैं।

( ३ ) जिस स्वर का प्रकाश किसी राग या रागिनी में संबादी स्वर से भी कम होता है उसे अनुबादी स्वर कहते हैं।

( ४ ) जिस स्वर के प्रकाश से किसी राग या रागिनी का स्वरूप बिगड़ जाय उसे विवादी स्वर कहते हैं। अर्थात् जहाँ कहीं बिबादी स्वर का प्रकाश होता है वहां कान को कदापि प्रिय नहीं मालूम होता।

शि०—राग या रागिनियों के विषय में कितने मत भेद हैं ?

गु०—राग या रागिनियों के विषय में चार मत भेद हैं। यथा, हनुमंत मत, शिव मत, भरत मत और तानसेनी मत। परन्तु आजकल बहुत कम ऐसे गानेवाले हैं जोकि हनुमंत और शिव मत से गाते हैं। अस्तु बङ्गाल और दक्षिण में भरतमत से राग या रागिनी गाते हैं। और पञ्जाब में शुद्ध तानसेनी मत से, और सँयुक्त प्रदेश में तानसेनी और भरत मत मिला हुआ गाते हैं।

# राग या रागिनियों के गानेका समय

## रात तीन बजे से सवेरे छः बजे तक :—

ललता, ललिता, सोहनी (शोभिनी) परज, कालगड़ा, रामकली, पंचम, योगिया, रामश्री, गुनकली, भैरव इत्यादि ।

## सवेरे ७ बजे से ११ बजे दिन तक :—

अहिरी, योगी, भैरवी, प्रभाती, देशी, गुर्जरी, टोड़ी, आसावरी, सिंधभैरवी, जौनपुरी आदि टोड़ी, माड़, देवगंधार, मधुमाधवी, विभास, बिलावल, और कैकभ इत्यादि ।

## ११ बजे दिन से २ बजे दिन तक :—

सब प्रकार के सारंग, पीलू, धानी, बड़हंस, पटमंजुरी, हंसकंकली, बरुआ इत्यादि ।

## २ बजे दिन से ५ बजे संध्या तक :—

धनाश्री, काफी, पलास, मुलतानी, सोरठी, इत्यादि ।

## ५ बजे संध्या से ७ बजे रात तक :—

मालश्री, गौड़ाश्री, जैत, पूर्वी, रेनकी, मारवी, दीपक, बराटी या पूरिया, कल्याण, गौरी, श्री, जैतश्री, त्रिवेनी रेवा, मालव इत्यादि ।

## ७ बजे रात से ११ बजे रात तक :

भूप, भूपाली, कल्याण, इमन-कल्याण, शाम कल्याण हमीर, कामोद, हेम, चन्द्रकान्त, नट, छाया, छाया-नट केदारा, मलुहा, चांदनी, देश, सोरठ, खंमाज, दुर्गा

तिलंग, झिंझौटी, पहाड़ी, जैजैवन्ती, तिलक, कामोद, सहाना, दरबारी, कान्हेड़ा आदि १८ प्रकार के, नीलांबरी, गारा, बाघेश्वरी, बहार इत्यादि ।

### ११ बजे रात से १ बजे रात तक :—

बेहागड़ा, बिहाग, शंकरा, मालकोश इत्यादि ।

### १ बजे रात से ३ बजे रात तक :—

मालवी, हिन्डोल, इत्यादि ।

वसंत के दिनों में वसंत राग रात के समय,

वर्षा के दिनों में मेघ राग, और सब प्रकार के मलार, कजरी और सावनी इत्यादि,

होली के दिनों में होली, चाहे किसी राग या रागिनी में हो,

और चैत के महीने में चैती, चाहे किसी राग या रागिनी में हो, गाना चाहिये ।

---

# वर्तमान मत

## ६ राग और ३० रागिनियाँ

अर्थात् एक २ राग के पांच २ स्त्रियाँ

(१) राग भैरव ... ... ...
- (१) भैरवी
- (२) मधुमाधवी
- (३) बंगाली
- (४) बगाटी
- (५) सैंधवी

(२) राग दीपक
- (१) सह
- (२) कान्हेड़ा
- (३) देश
- (४) केदारा
- (५) पहाड़ी

(३) राग मालकोश ... ...
- (१) टोड़ी
- (२) गौरी
- (३) कैकभ
- (४) खंभावती
- (५) गुणकली

(४) श्री राग ... ... ...
- (१) बसंत
- (२) मालश्री
- (३) धनाश्री
- (४) आसावरी
- (५) मालवी

(५) राग हिन्डोल ... ...
- (१) रामकली
- (२) ललिता
- (३) पटमंजरी
- (४) देशाखी
- (५) बिलावली

(६) राग मेघ ... ... ...
- (१) भूपाली
- (२) देशकारी
- (३) मल्लारी
- (४) गुर्जरी
- (५) तिलका

इनके सिवाय इन राग और रागिनियों के ४८ पुत्र और ४८ पुत्र-वधू भी हैं जिनका वर्णन दूसरे भाग में किया गया है।

# इमनकल्याण, चौताल (मात्रा १२)

(ठाठ) आरोह स रे ग मत प ध नि सं
अवरोह सं नि ध प मत ग म रे स

(दोहा) सबही तीवर सुर जहाँ मृदु म, कबहु लग जाय।
ग नि, वादी, संवादि हैं, इमन सुराग कहाय॥

गीत

स्थाई — जय जय जगदीश राम, श्याम धाम पूर्ण काम,
आनन्द घन ब्रह्मा विष्णु, सच्चित् सुख कारी।

अन्तरा (१) सोहत गल मुक्त माल, कंस रावणादि काल,
बिनबत हम बार बार, दीनन हितकारी।

अं० (२) बन्दत नित प्रति सुरेश, गावत गुण-गण महेश,
ध्यावत तव नाम शेष, ब्रह्मा मुख चारी।

अं० (३) मोदक प्रिय मोद करण, सुयश भरण बिपति हरण,
तव उदार चरण शरण, 'किरण' बलिहारी।

---

# राग साधन

## इमन कल्याण, चौताल (मात्रा १२)

स्थाई

| × | | ० | | १ | | ० | | १ | | २ | ताल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मं | नि | ध | मत | प | प | प | – | ग | ग | – | ग |
| ज | य | ज | य | ज | ग | दी | – | श | रा | – | म |
| रे | ग | ग | ग | ध | प | ग | म | रे | नि | रे | स |
| शा | आ | म | धा | आ | म | पू | उर | न | का | आ | म |

स ध़ स रे ग मत ग मत प मत ग ग
आ आ नन द घ न ब्र अम हा वि श्व मु

रे ग मत प नि ध ग रे नि़ रे स —
स अ चि त सु ख का आ आ आ री —

अन्तरा

प मत ग ग प ध सं — सं ध़ — सं
सो ओ ह त ग ल मु — क मा — ल

सं गं रें सं ध नि सं नि ध मत प प
क अन ख रा आ व णा आ दि का आ ल

नि ध नि प ध मत ग मत ध मत प प
वि न व त ह म बा आ र बा आ र

रे ग मत प नि ध ग रे नि़ रे स —
दी ई न न हि त का आ आ आ री —

---

नोट—अं० (२) व (३) भी इसी सरगम से निकलेंगे ।
जिन स्वरों के ऊपर बिन्दु हों वे तार सप्तक के, और जिन के नीचे बिन्दु हों वे मन्द्र सप्तक के स्वर हैं ।

# हिंडोल, चौताल, मात्रा १२

## ओढ़व राग

### ठाठ

आरोह—स ग, मत ध नी सं

अवरोह—सं नि, ध मत ग स

### दोहा

जहाँ ऋषभ पंचम नहीं, सब तीखे सुर जान।
संवादी बादी ध, ग हि, राग हिंडोल मान॥

### गीत

स्थाई — लंका संग्राम राम, सोभित सुन्दर सुजान,
अद्भुत गति कहि न जात, जबही कर धरत बान॥

अन्तरा (१) अर्ध चन्द्र अति विचित्र, कान लागि कहत मंत्र,
आज्ञा बिनु कछु न बनत, कहो तो प्रभु हतौं प्राण॥

अं० (२) रिपु छल दल प्रबल मेघ, बादल ज्यों ढाकि लेत,
मृगपति गति चरण धरत, आगे रघु कुल के बान॥

अं० (३) कान्हर करुणा निधान; वैरत रण रङ्ग भूमि,
जैसे वर्षा ऋतु में, निकसत अरु छिपत भान॥

# हिंडोल, चौताल, मात्रा १२

## स्थाई

ताल × ० १ ० १ २

सं नि ध मत ग मत ध नि ध मत ग
ल अं का आ स अं आ आ म रा आ

स ग मत ध ग मत ध नि ध मत ग
शो भि त सु उन द र सु जा आ

नि़ स नि़ ध़ स ग मत ध नि सं – सं
अ द भु त छ वि क हि न जा — त

नि सं गं मंत गं सं ध नि ध मत ग म
ज ब हीं ई क र धि र त बा आ न

अंतरा

ग ग मत – ध ध नि़ नि़ नि सं – सं
अ र ध — च द्र अ नि वि चि — त्र

नि सं गं मंत गं सं नि सं नि ध मत मत
का आ न अ ला गि क ह त म अं त्र

गं – गं – मंत गं सं गं सं नि सं सं
आ — ज्ञा — बि नु क छु न ब न त

नि सं गं मंत गं सं ध नि ध मत ग म
क हो तो ओ प्र भु ह तौ औ ष आ न

अ० (२) ब (३) भी इसी सरगम में।

# मारवा, तिताला मात्रा १६

षाढ़व राग

ठाठ

आरोह– स रेक ग मत ध नि सं
अवरोह– सं नि ध मत ग रेक स

दोहा

तीनो ग. ध नि सुर ऋषब कोमल, पंचम नाहि।
संवादी वादी ध, रे हैं कहत मारवा ताहि॥

## गीत

स्थाई— सब कोउ रीझत मारवा राग पर ।
मानत गुनि जन षाढ़व ठाठ कर ॥

अन्तरा— रे, म, अंश सुर पंचम वरजत ।
गुनि जन मानत रे को मुख्य सुर ॥

# राग मारवा, तिताला, मात्रा १६

### स्थाई

१ × ३ ०
नि़ रेंक ग मत ध मत ध मत ग रेंक ग मत ग रेंक स स
स ब को उ री ई झ त मा र वा आ रा ग प र

नि़ रेंक नि़ ध़ म़त ध़ स स नि़ रेंक ग मत ग रेंक स स
मा आ न त गु नि ज न षा आ ढ़ व ठा ठ क र

### अन्तरा

मत ध मत ध सं रेंक सं सं नि रेंक गं मत गं रेंक सं सं
रे म अ अं श सु र प अँ च म व र ज त

नि रेंक नि ध मत ध सं मं नि़ रेंक ग मत ग रेंक स स
गु नि ज न मा आ न त रे ए को ओ मु ख्य सु र

---

नोट—मारवा राग को कोई २ लोग दीपक राग कहते हैं ।
( पींगले के टेबुल नम्बर एक को देखिये )

# गौड़ सारङ्ग, तिताला, मात्रा १६

ठाठ

आरोह— स रे ग म॑त प ध नि सं

अवरोह— सं नि ध प म॑त म ग रे स

दोहा

जहा तीवर हैं रे, ग, ध, नि, दोऊ मध्यम संग ।
संवादी वादी ध, ग हि, कहत गौड़ सारंग ॥

स्थाई— प्रिये पल न लगे मोरी अखियां ।
नाथ तुम बिन जिय घबड़ावे, चैन न आवे, घड़ी प
छिन दिन रैन ॥ पल न लागे मोरी ।

अन्तरा— वीर पवन सुत, लावे सदेसवा ।
राम सन कहियो हमारी व्यथा ।
प्रभु के दरश बिन तरस रही अखियाँ ॥

# गौड़ सारङ्ग, तिताला, मात्रा १६

स्थाई

० १ × ३

नि़ स रे ग रे नि़ — रे नि़ स ग रे स — ग —
प्रि ये प ल न ला — गे मो रि अ खि याँ — आ —

ग म प नि सं रें नि सं ध प ग म रे ग प ग
ना थ तु म बि न जि य घ ब रा आ वे च ये न

म रे नि़ रे स — स प म॑त प ग म रे ग — रे
अ न आ आ वे — घ ड़ी प ल छि न दि न — र

नि़ स रे ग रे नि़ — रे नि़ स प — प प नि ध
ये न प ल न ला — गे मो रि बी — र प ध न

नोट—अन्तरा सम से शुरू है ।

अन्तरा

नि नि सं — सं रें सं नि सं — सं गं रें मं गं रें
सु त ला — ये सं दे स बा — रा म स न क हि

सं — प ध प म, ग — — — रे ग रे प म ग
यो — ह म री व्य था — — — प्र भु के द र श

रे स रे रे म म प — नि सं प ध प म ग —
बि ना त र स र ही — अ खि आं आं आं आं आं —

---

# रागिनी बिलावल, झपताल, मात्रा १०

ठाठ

आरोह—स ग प ध निक नि सं
अवरोह—सं नि निक ध प म ग रे स

दोहा

मृदु मध्यम तीवर सबहि, दोउ निषाद जेहि माहि।
ध ग, वादी संवादी अहैं, कहत बिलावल ताहि॥

गीत

स्थाई— प्रबलही श्याम अब दुरबलही देख जन,
झटही पट झपट कर गज बचायो॥

अन्तरा—गोप ही ग्वाल को राख लियो गिरधारी,
इन्द्र को मान छिन में घटायो॥

# रागिनी बिलावल, झपताल, मात्रा १०

## स्थाई

| × | | ३ | | | ० | | १ | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ध | ध | रें | सं | — | ध | — | प | म | ग |
| प्र | ब | ल | ही | — | श्या | — | म | अ | ब |
| रे | ग | प | म | ग | रे | — | म | म | म |
| दु | र | ब | ल | ही | दे | — | ख | ज | न |
| म | म | ध | ध | ध | निक | प | ध | नि | सं |
| झ | ट | ही | प | ट | झ | प | ट | क | र |
| गं | गं | रें | सं | — | प | प | ध | नि | सं |
| ग— | ज | ब | चा | — | यो | ओ | ओ | ओ | ओ |

## अन्तरा

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | — | प | ध | नि | सं | — | सं | सं | — |
| गो | — | प | ही | ई | ग्वा | — | ल | को | — |
| सं | — | गं | गं | मं | गं | रें | ध | निक | प |
| रा | — | ख | लि | यो | गि | रिं | धा | आ | गी |
| प | — | ध | ग | प | ध | सं | सं | सं | सं |
| इ | — | न्द्र | को | ओ | गा | आ | न | छि | न |
| रें | गं | रें | सं | — | प | प | ध | नि | सं |
| मे | ए | घ | टा | — | यो | ओ | ओ | ओ | ओ |

# राग मालकोश, चौताल, मात्रा १२

ठाठ

आरोह—स गक म धक निक सं
अवरोह—सं निक धक म गक स

दोहा

कोमल सब, पंचम, ऋषभ दोऊ वरजित कीन्ह।
संवादी वादी स, म, हि, मालकोश कह चीन्ह॥

गीत

स्थाई— आए रघुबीर धीर लङ्काधीश अवध मान।
सङ्ग सखा अङ्गद सुगरीव और हनुमान॥

अन्तरा— रहस रहस गावत युवती जग बन्धन,
विधान दिव्य कुसुम वरखत घन,
जाके रहे नभ विमान॥

# राग मालकोश, चौताल, मात्रा १२

( नोट—ग, ध, म, नि, सब कोमल हैं )

स्थाई

× ० १ ० १ २

म — स — ध नि स म म ग म म
आ — ए — रे घु बी ई र धी ई र

म — म म — म ध म म ग — ग
लं — क धी — श अ ब ध मा — न

ग — म ध नि सं सं — गं सं नि ध
सं — ग स खा आ अं — ग द सु ग

मध नि ध म — म ग ग म म — स
रीह इ व आ — र ह नु उ मा — न

अन्तरा

ग ग म ध ध नि सं — सं सं नि नि
र ह स र ह स गा — व त यु ष

सं — सं सं सं — नि ध नि ध — म
ती — ज ग बं — ध न बि धा — न

सं — मं गं सं सं सं सं गं सं नि ध
दि — व्य कु सु म ब र ष त घ न

म ध मध नि ध म ग ग ग म स स
जा आ केए ए र हे न भ वी ई मा न

# रागनी भूपाली, ताल धमार, मात्रा १४

ठाठ

आरोह — स रे ग प ध सं
अवरोह — सं ध प ग रे स

दोहा

आरोहहु अवरोह यह, सुर 'म' 'नि' कीन्हे त्याग ।
सम्बादी बादी ध, ग, हि कहहु भूपाली राग ॥

## गीत

स्थाई —देख परो शाम, तज सब काम।

अन्तरा (१) देख परो झूठ जग सब अनित नर तन,
सांचे जपो हरिनाम॥

अन्तरा (२) देख परो भूप रूप मन हरत सब जन,
पांचे स्वर तजे नि, म॥

अन्तरा (३) देख परो छोड़ दे क्रोध मद मोह,
खरचना कछु दाम॥

# रागनी भूपाली, तालधमार, मात्रा १४

### स्थाई

| १ | | २ | | × | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ग | ग | प | ध | सं | — | सं |
| दे | ख | प | रो | शा | — | म |
| प | सं | ध | प | रे | — | स |
| त | जो | स | ब | का | — | — |

### अन्तरा

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ग | ग | प | ध | ग | — | ग |
| दे | ख | प | रो | झू | — | ठ |
| प | प | ध | प | सं | सं | सं |
| ज | ग | स | ब | अ | नि | त |
| ध | रें | सं | सं | सं | — | रें |
| न | र | त | न | साँ | — | चे |
| गं | पं | गं | रें | ध | रें | सं |
| ज | पो | ह | रि | ना | आ | म |

अं० (२) व (३) भी इसी सरगम में निकलेंगे।

# वृन्दावनी सारंग, तिताला, मात्रा १६

ठाठ

आरोह— म रे म प निक सं
अवरोह— सं निक प म रे स

दोहा— जब गंधार धैवत नहीं, कोमल लखै निषाद ।
सो रागिनि वृन्दावनी सारंग, बिना विवाद ॥

गीत

स्थाई—मेरा मेरा तू कहता है, तेरा कोइ न होवेगा ।
मर जाने पर कहां गया तू, तुझ को कोई न पूछेगा ॥

अन्तरा (१) मेरा पिता मेरी जननी, मेरा भ्राता मेरी भगनी ।
मेरा स्वामी मेरी पत्नी, संग में कोई न जावेगा ॥

अन्तरा (२) दौलत दुनिया माल खजाना, इनसे मन को व्यर्थ लोभाना
इनसे सिर्फ़ यहीं याराना, अन्त को तज तू जावेगा ॥

अ० (३) आदि अन्त का सुख जो चाहो, परमेश्वर का ध्यान लगाओ
ज्योति 'किरण' तबही लख पावो, आवागमन मिटावेगा ॥

# वृन्दावनी सारंग, तिताला, मात्रा १६

स्थाई

| ३ | ० | १ | × | ताल |
|---|---|---|---|---|
| स रे म प निक प म रे प म रे स रे रे स — | | | | |
| मे रा मे रा तू कह ता है ते रा कोई न हो वे गा — | | | | |
| प म रे म प म रे स प म रे स रे रे स — | | | | |
| मर जा ने पर कहां ग या तू तुझ को कोई न पू छे गा — | | | | |

अन्तरा

म रे स रे म प निक प म म म प म प म रे
मे रा पि ता मे री जन नी मे रा भ्रा ता मे री भग नी

निकनिक प प म म रे स प म रे स रे रे स —
मे रा स्वा मी मे री पत नी संग में कोई न जा वे गा —

अ० ( २ ) व ( ३ ) इसी सरगम में निकलेंगे।

# राग हमीर, तिताला, मात्रा १६

ठाठ

अरोह — स रे ग म मत प ध नि सं
अवरोह — सं नि ध प मत म ग रे स

दोहा — दो मध्यम तीवर सबहि, धैवत बादहि जान।
संबादी गंधार है, राग हमीर बखान॥

गीत

स्थाई — चेतो रे मन, क्या है जगत में।
जग की सकल भावना त्यागो
राखो दृढ़ता आतम पद में॥

अन्तरा — इस जग का कुछ सार नहीं है।
डूब रहा माया के बश में॥

संचारी — तिमिर नशाओ, भ्रम हि भगावो।
समता भाव, धरो निज मन में।

# राग हमीर, तिताला, मात्रा १६

## स्थाई

० १ × ३ ताल

प नि ध नि मत प ग म ध — ध प सं नि ध प
चे ए तो ओ रे ए म न क्या — है ज ग त में ए

प प प प ध ध प — ग म रे — म रे म —
ज ग की स क ल भा — व अ ना — त्या आ गो —

स म ग प मत ध प नि ध सं नि रें सं नि ध प
रा आ खो ओ द ढ़ ता आ आ आ त म प द में ए

## अन्तरा

ध ध ध ध नि ध सं सं रें — रें रें सं नि सं —
इ स ज ग का आ कु छ सा — र न ही इ हैं —

सं — रें रें रें — गं रें सं नि ध — ध रें सं —
इ — व र हा — मा आ या आ के — व श में —

## संचारी

नि सं नि रें सं नि सं — ध ध सं नि ध पमत प —
ति मि र न शा आ वो — भ्र म हि भ गा आ ओ —

मत प ध — प ध नि — ध सं नि रें सं नि ध प
स म ता — भा आ व — थ रो नि ज म न में ए

# सोरठ, तिताला, मात्रा १६

ठाठ

आरोह—स रे ग म प ध निक नि सं

अवरोह—सं नि निक ध प म ग रे स

दोहा—पंचम बादी अरु ऋषब, संमबादी संयोग।
देश के ही सुरन ते, सोरठ कहते लोग॥

गीत

स्थाई—जा जा रे भ्रमरा दूर दूर,
तेरो सो रंग अंग है उनको;
जिन मेरो चित कियो चूर चूर॥

अन्तरा—जब लगि तरुण फूल महकत हैं,
तब लग रहत हजूर (ह) जूर।

संचारी—'सूरश्याम' मतलब के मधुकर,
ले ले कली रस घूर घूर॥

---

# सोरठ, तिताला, मात्रा १६

स्थाई

ताल— ० १ × ३

सं — — निक ध प म म प — म ध प म ग रे
जा — — जा ओ रे भ्र म रा — दू ऊ र दू ऊ र

रे ग रे प — म ग — ग स — रे ग म — —
ते रो सो रं — ग अं — ग है — उ न को — —

रे रे म म प प ध ध निक — ध प — प — —
जि न मे रो चि त कि यो चू — र चू — र — —

### अन्तरा

रे ग रे प म म म ग रे ग स स रे ग म –
ज ब लगि त र ण फू ऊ ल म ह क त हैं —

रे रे म म प प ध ध नि॰ – ध प – प – –
त ब ल ग र ह त हू जू — र जू — र — —

### संचारी

म – म प – प नि नि प प नि – नि सं रें रें
सू — र श्या — म म त ल ब के — म धु क र

### आभोग्य

मं – रें नि रें नि सं सं प प नि – नि सं रें रें
सू — र श्या आ म म त ल ब के — म धु क र

नि नि नि नि — सं सं — नि रें सं नि॰ – ध प –
ले ले क ली — र स — धू ऊ र धू — ऊ र —

# भजन, तिताला, मात्रा १६

### गीत

स्थाई ( १ ) मुझे है चाह दर्शन की निहारोगे तो क्या होगा ।
,, ( २ ) मेरी बिनती है पाँवों की पसारोगे तो क्याहोगा ॥

अन्तरा ( १ ) ये भवसागर अगम नदियां. झिकोरैं देत निशदिनकी,
मेरी है नाव अति झझरी, उबारोगे तो क्या होगा ॥

### गीत

अन्तरा (२) विपति हरनाम तेरा है, कृपा कर ऐ कृपा सिन्धो।
हमें ऐसे अनाथों को, जो तारोगे तो क्या होगा॥

# भजन, तितालो, मात्रा १६

### स्थाई

३ ० १ × ताल

स म – म – प – म प प नि नि सं – –
मु झे – है – ना – – ह द र श न की – –

प निक ध प – गक – – म प म गक रे स – –
नि हा आ रो – गे – – तो क्या आ हो ओ गा – –

नोट—इसी स्थाई के सरगम में दूसरी स्थाई भी निकलेगी।

### अंतरा

म मं – प – नि – – सं गंक रें नि नि सं – –
ये भव – सा – ग – र अ ग म न दि यां – –

क
नि निक – निक – – निक – सं रें सं निक ध प – –
झि को – रे – – द्वे – त नि शि दि न की – –

म म – म – प – – म प प नि नि सं – –
मे री – है – ना – – व अ ति झ झ रा – –

प निक ध प – गक – – म प म गक रे स – –
उ बा आ रो – गे – – तो क्या आ हो ओ गा – –

नोट—अ० २ भी इसी सरगम में निकलेगा।

# खंमाज, तिताला, मात्रा १६

आरोह— स ग म प ध निक नि सं
अवरोह— सं नि निक ध प म ग रे स

दोहा— चढ़त ऋषब न लगाइये, दोऊ निषाद बिराज ।
ग, नि बादी सम्बादी, दरशे राग खंमाज ॥

## गीत

स्थाई— अरे मन काहे को सोच करे रे ।
धीरज काहे न नेक धरे रे ॥

अन्तरा (१) सोच किये से होत कहा है ।
काहे बृथा मन मन ही जरे रे ॥

अन्तरा (२) जो करमन लिख दीन्ह बिधाता ।
एक तिल ता सों घटे न बढ़े रे ॥

अन्तरा (३) चिन्तन में प्रभु ही एक साथी ।
मन दुख, 'किरण', प्रभु ही हरे रे ॥

# खंमाज, तिताला मात्रा १६

## स्थाई

० १ × ३

स स ग ग म — प ध सं — निक ध प म ग —
अ रे म न का — हे को सो — च क रे ए रे —

नि — नि नि सं — प ध सं — निक ध प म ग —
धी — र ज का — हे न ने — का ध रे ए रे —

म — ध ध निक ध प ध नि — नि सं ध नि सं —
सो — च किये ए से ए हो — त क हा आ हैं —

नि – नि नि सं – प ध सं नि॰ध प म – ग –
का — हे वृ था — म न म न ही ज रे — रे —

नोट—अन्तरे ( २ ) व ( ३ ) इसी सरगम में निकलेंगे।

# काफी, तिताला, मात्रा १६

## ठाठ

आरोह— स रे ग॰ ग म प ध नि॰ नि सं
अवरोह—सं नि नि॰ ध प म ग॰ ग रे स

दोहा— मृदु मध्यम गन्धार द्वे, मृदु तीव्रहू निषाद।
काफी सुन्दर राग है, प. स, बादी सम्वाद॥

## गीत

स्थाई—(आज) देहि देव दरशन।
बहु दिनो से हूँ मैं निराश्रय,
देहि पदाश्रय करो परित्रान॥

अन्तरा (१) खोजत हूँ मैं निशि दिन तुमको,
धीर धरत नाहि मन मेरा क्षण को।
ज्योति प्रकाशो अपने 'किणर' को,
देरि सहत नाहि व्याकुल प्राण॥

अन्तरा (२) दास कहत है पुकारि पुकारि,
तुम सब बिधि मम हो हितकारी॥
है विश्वास मुझे यह भारी,
कि सदा रहेगा हमारा तुम्हें ध्यान॥

# काफी, तिताला, मात्रा १६

## स्थाई

० १ × ३ ताल

स रे रे गक – म – म प – म गक रे स नि़क
दे हि दे व — द — र श — — अ अ अन आ ज

म म — निक ध — ध — निक ध निक सं निक ध प —
ब हु — कि नो — से — हुं ऊं मैं नि रा आ श्रय —

प ध निक सं निक ध प प ग म ग प म — स नि़क
दे ए ही प दा आ श्र य क रो प रि त्रान — आ ज

## अन्तरा

म – म म प – नि – सं सं सं गंक रें नि सं –
खो — ज त हु — मैं — नि शि दि न तु म को —

ध निक ध निक ध निक प ध निक रें सं निक ध – प –
धी ई र ध र त ना हि म न मे रा क्षण — को —

म – ध ध ध – ध – निक धृ निक सं निक ध प —
ज्यो — ति प्र का — शो — अ प ने कि र ण को —

प ध निक सं निक ध प प ग म ग प म — स नि़क
दे ए रों स ह त ना हि नि क स त प्राण — आ ज

# रागिनी भैरवी, ताल रुपक, मात्रा १४

ठाठ

आरोह--स रेक गेक म प धक निक सं
अवरोह--सं निक धक प म गक रेक स

दोहा— सब कोमल सुर भैरवी, ठाठ संपूरन होइ।
म, स, बादी सम्बादि हैं, सब चाहे जो कोई॥

गीत

स्थाई— श्रीरामचन्द्र कृपाल भज मन हरण भव भय दारूनम्।
नभ कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारूनम्॥

अंतरा(१) भज दीन बन्धु दिनेश दानव, दैत्य वंश निकंदनम्।
रघुनन्द आनंद कन्द कोशलचन्द्र दशरथ नन्दनम्॥

अं०(२) शिर मुकुट कुण्डल तिलक भाल, उदार अंग विभूषणम्।
आजानु भुज शर चाप धर, संग्राम जित खर दूषणम्॥

अं०(३) इमि कहत, 'तुलसीदास' शङ्कर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कर कामादि खल दल गंजनम्॥

# रागिनी भैरवी, ताल रुपक, मात्रा १४

स्थाई

२ × १ २ × १
प प प — प प — प प धक — प म म
शि री रा — म चं — द्र कृ पा — ल भ ज

प म गक गक रेक स स म म गक — रेक स —
म न ह र ण भ व भ य दा — रू न मं

ध़क नि़क स — स स — स रेक गक — गक गक गक
न भ कं — ज लो — च न कं — ज मु ख

म म गक — गक गक गक म — गक — रेक स —
क र कं — ज प द कं — जा — रु नम —

अन्तरा

गक म धक — धकधक — धकधक निक — निक सं —
भ ज दी — न ब — न्धु दि ने — श दा —

सं सं निक — निक निक — सं सं निक — धक प —
न व दै — त्य वं — श नि कं — द नम —

गक म प — प प — प प धक — प म —
र धु नं — द आ — नं द कं — द को —

प म गक — रेक स — म म गक — रेक स —
श ल चं — द्र दश — र थ नं — द नम —

अन्तरे (२) व (३) इसी सरगम में निकलेंगे

# बरोवां पीलू, तिताला, मात्रा १६

ठाठ

आरोह— स रे गक ग म प ध निक नि सं
अवरोह— सं नि निक ध प म गक ग रे स

गीत

स्थाई— श्रीकृष्ण चरण गुन गान करो।
गुन गान करो हरी नाम करो॥

अन्तरा (१) मधु कर पुष्प कमल पर छाजत,
(मद मोह में प्राण लुटाय दियो,) दो बार
हरि को सुमिरो, मन ध्यान धरो ॥

अन्तरा (२) भज मन हरि के चरण कमल नित
(मन राधिका प्रिय को सुमिरो) दो बार
भवगाह तरो हरी नाम करो ॥

# बरोवाँ पीलू, तितांला मात्रा १६

## स्थाई

ताल ० १ × ३

नि़ स ग॑ – रे स रे रे प प ग॑ रे स नि़ स –
शि री कृ श न च र न गु न गा आ न क रो —

ग म प – ग म नि॑ – ध प ग – रे प म –
गु न गा — न क रो — ह रि ना — म क रो —

## अन्तरा

नि़ स ग म नि॑ ध प प ग ग म प ग॑ रे स स
म धु क र पु ष्प क म ल प र छा आ ज त

म प सं – नि॑ ध नि॑ – ध प ध – म म प –
म द मो — ह में प्रा — न लु टा — य दि यो —

ग ग ग – ग ग म – प प ग॑ रे स नि़ स –
ह रि को — सु मि रो — म न ध्या आ न ध रो —

---

नोट—अन्तर (२) भी इसी सरगम में निकलेगा।

# केदारा, तिताला, मात्रा १६

ठाठ

आरोह— स म मत प ध नि सं

अवरोह— सं नि ध प मत म ग रे स

दोहा—मध्यम द्वै तीवर सबहि, आरोहत रे, ग, हानि ।
स, म, सम्बादी बादी हैं ,केदाराही पहिचानि ॥

गीत

स्थाई — दरशत प्रभू केदार सब को ।
राखत मुख्य सुर मध्यम शुद्ध कर
अनुलोम ही में वरजत रे, ग, को ॥

अन्तरा — मध्यम दोनों छाजत इस में,
स, म, योग राख्यो हरदम आरोहत ।
गावत गुनिजन प्रथम रात में,
मधुर माधुरी हरत मन को ॥

# केदारा, तिताला, मात्रा १६

स्थाई

| ० | | १ | | + | | ३ | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सं | नि | ध | प | मत | प | ध | प | म | — | — | म | म | म | प | — |
| द | र | श | त | प्र | भू | के | ए | दा | — | — | र | स | ब | को | — |
| प | — | प | प | ध | ध | प | प | म | म | ध | प | म | म | रे | स |
| रा | — | ख | त | मु | ख्य | सु | र | म | ध्य | म | शु | द्ध | क | र | |
| म | स | म | — | म | म | प | — | नि | ध | सं | रें | सं | नि | ध | प |
| अ | नु | लो | — | म | ही | में | — | ब | र | ज | त | रे | ग | को | ओ |

अन्तरा

ग — प प सं — सं — सं — सं सं सं रें सं —
म — ध्य म दो — नो — छा — ज त इ स में —

सं नि ध ध सं — सं — सं रें सं नि ध प — म
स म यो ग रा — ख्यो — ह र द म आ रो — ह

म — म — प प ध प म म ध प म म रे स
त — गा — व त गु नि ज न प्र थ म रा त में

स स म — म म प — नि ध सं रें सं नि ध प
म धु र — मा धु री — ह र त अ म न को ओ

# केदारा चाँदनी, चौताल, मात्रा १२

ठाठ

आरोह— स म मृत प ध नि सं
अवरोह— सं नि निक ध प म मृत ग रे स

दोहा—केदारही के मेल बहु, तीवर मध्यम लाग।
कहुं निषाद कोमल लगे, कहत चाँदनी राग॥

गीत

स्थाई— जय जय भारत विशाल,
झलकत हीम कीटभाल,
बुद्धि बल दृग ज्वलित जाल, तेज पुंज धारी॥

अन्तरा (१) सरस्वती पीयूष खान,
बुध जन नित करत पान,
त्रिभुवन अमृताय मान, करन ताप हारी ॥

अं० (२) उन्नत मन अति उदार,
साधन धन सिद्धि द्वार,
जतन रतन निधि अपार, दीन दीन तारी ॥

# केदारा चाँदानी, चौताल, मात्रा १२

## स्थाई

× ० १ ० १ २ ताल

सं नि ध प मत प ध प म म — म
ज य ज य भा आ र त वि शा — ल

म म म म ध प ग म रे नि़ स स
झ ल क त ही म की ई ट भा आ ल

स म म म प प ध निक ध प मत प
बु धि ब ल ह ग ज्ञ ली त जा आ ल

मत प ध सं ध प मलंप धनि सरें गंरें संनि धप।
ने ए ज अ पुं ज धा आ आ गी ई ई

## अन्तरा

प प प ध — नि सं गं रें सं — सं
स र स्व ती — पी यू ऊ ष खा — न

सं ध ध नि सं रें नि सं ध प — प
बु ध ज न नि त क र त पा — न

म म म म प प ध निक ध प मत प
त्रि भु व न अ मृ ता आ य मा आ न

मत प ध सं ध प | [illegible] |
क र न ता आ प्र हा आ आ री ई ई

अं० (२) भी इसी सरगम में निकलेगा ।

# पूर्वी, तिताला, मात्रा १६

## ठाठ

आरोह—स रेक ग मत प धक नि सं
अवरोह—सं नि धक प मत म ग रेक स

दोहा— कोमल रे, ध, तीवर ग, नि, दोऊ मध्यम लाग ।
ग, नि वादि सम्वादि, हैं, वर्नत पूर्वी राग ॥

## गीत

स्थाई— पूरवी राग, बजावे कांधा बांसुरी ॥
पूरबी ठाठ सम्पूर्न मानत ।

अन्तरा— रे, ध, कोमल म, दोनों लागेरी ॥

# पूर्वी, तिताला, मात्रा १६

## स्थाई

१ × ३ ० ताल
स रेक ग प मत प मत ग ग मत धक प ग मग रेक स
पू र बी ई रा आ ग ब जा वे कां धा वाँ आ सु री.

अन्तरा

ग ग प नि सं — सं सं नि सं रेंक सं नि — धक प
पू र बी ई ठा — ठ सं पू ऊ र न मा — न त

प — प — मत प मत ग ग मत धक प ग मग रेक स
रे — ध — को ओ म ल म अ दो नो ला आ गे री

# देश, तिताल, मात्रा १६

ठाठ

आरोह— स रे म प निक नि सं
अवरोह— सं नि निक ध प म ग रे स
दोहा— द्वै निषाद कोमल मधिम, चढ़ते ध, ग, न लगाय ।
सम्वादी बादी प, रे, गुनी देश जन गाय ॥

गीत

स्थाई— चतुर सकल जन देश गुन गावे ।
भावे सब मन सुन सुख आवे ॥
अन्तरा— बादी रे, को गुनिजन मानत,
कोमल नी सब रोहन धावे ॥

# देश, तिताला मात्रा १६

स्थाई

३ ० १ × —ताल
प ध प म ग रे ग स रे रे म प नि — सं —
च तु र स क ल ज न दे श गु न गा — वे —

नि — सं — मं गं रें सं नि नि सं रें सं निक ध प
भा — वे — स ब म न सु न सु ख आ आ वे ए

अन्तरा

म — प — नि — सं — सं रें गं सं मं गं रें सं
वा — दी — रे — को — गु नि ग्र न मा आ न त

पं मं गं रें मं गं रें सं नि नि सं रें सं निक ध प
को ओ म ल नि इ स व रो ओ ह न धा आ वे ए

# दरबारी कान्हेड़ा, तिताला, मात्रा १६

ठाठ

आरोह— स रे गक म प धक निक सं
अवरोह— सं निक प म गक रे स

दोहा— मृदु ग, म, ध, नि, तीखे रेषध अवरोह में ध, न लाग।
कान्हेड़ा दरबारी है, दरबारी कोई न राग ॥

गीत

स्थाई— दरबारी को गावे सब जन।
रेषब मुख्य सुर मानत गुनियन,
कोमल ग, ध, नि, म, राखत सुश्तन ॥

अन्तरा— अनुदित अंग अति सोहत,
रेषब, धइवत, रुप बनावत,
बरजत धइवत अनुलोम जिने,
दिख रुप मन ॥

# दरबारी कान्हेड़ा, तिताला, मात्रा १६

## स्थाई

| ० | | १ | | × | | ३ | | —ताल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | क | | क | | | | |
| रे म | रे स | नि़ स | रे — | ग — | — म | रे रे | स — | |
| द र | बा आ | गी ई | को — | गा — | — वे | स ब | जन — | |
| क | | | | क | | क क क | | |
| नि़ — | स स | रे म | रे स | नि़ म | रे ध़ | नि़ नि़ | प़ प़ | |
| रे — | ष ब | मु ख्य | सु र | मा आ | न त | गु नि | य न | |
| | | क क क | | | | क | | |
| म़ — | प़ प़ | ध़ ध़ | नि़ स | प म | प ग | म रे | रे स | |
| को — | म ल | ग ध | नि मा | रा आ | ख त | सु य | त न | |

## अन्तरा

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | क | क | क | | | | |
| मं म | प प | ध — | नि नि | सं — | सं सं | रें रें | सं सं | |
| अ नु | दि त | आ — | ग ति | सो — | ह त | रे ए | प ब | |
| क क | | | | क | क क | क | | |
| नि नि | स सं | रें रें | सं सं | नि सं | रें ध | नि नि | प प | |
| ध इ | व त | रु उ | प ब | ना आ | व त | ब ग | ज त | |
| | | क क | | | क क | | | |
| म म | प प | सं ध | नि प | म प | नि ग | म रे | रे सं | |
| ध इ | व त | आ नु | लो म | जि ते | दि ख | रू प | म न | |

# शहाना, झपताल, मात्रा १०

ठाठ

आरोह— स रे गक म प निक सं

अवरोह— सं निक धं प म गक रे स

दोहा— तीखे रे, ध, कोमल निं, ग, म, चढ़त न ध, हि लगाय ।
प, स, वादी सम्वादी अहै, होत शहाना भाय ॥

गीत

स्थाई— हे जगदीश्वर सुध लो हमारी ।
तुम सब विधि मम हौ हितकारी ॥

अन्तरा ( १ ) जग के नायक, सिद्धि के दायक,
दीन सहायक, सबै गुण धारी ॥

अन्तरा ( २ ) हे जग के पित, दरशन दो नित,
यही दान मांगत 'किरण' भिखारी ॥

# शहाना, झपताल, मात्रा १०

स्थाई

| ताल— | × | | ३ | | | ० | | १ | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | स | — | हे | — | रे | स | रे | स | — | स |
| | हे | — | ज | — | ग | दी | ई | श्व | — | र |
| | स | म | म | — | म | म | प | गक | — | — |
| | सु | ध | लो | — | ह | मा | आ | री | — | — |
| | म | ध | ध | — | प | ध | म | प | — | प |
| | तु | म | स | — | ब | वि | धि | म | — | म |
| | सं | — | ध | — | प | म | प | गक | — | — |
| | हौ | — | हि | — | त | का | आ | री | — | — |

अन्तरा

म प निक — — सं — सं — सं
ज ग के — — ना — य — क
क
नि सं रें — सं निक सं निक — ध
सि इ द्धि — के दा आ य — क

ध — ध — प ध म प — प
दी — न — स हा आ य — क

सं सं ध — प म प गक — —
स वै गु — ण धा आ री — —

अं० (२) भी इसी सरगम में निकलेगा ।

---

# बागेश्री, तिताला, मात्रा १६

ठाठ

आरोह— स रे गक म प ध निक सं
अवरोह—सं निक ध प म गक रे स

दोहा— तीवर रे, ध, कोमल ग, म, नि, मध्यम बादि बखानि ।
खरज जहां सम्बादि है बागेश्री जु लखानि ॥

गीत

स्थाई— बागेश्री रागिनी हरत चतुर मन ।
अन्तरा— तीवर रे, ध, ग, नि कोमल लागत,
मुख्य सुर मध्यम मानत गुनिजन ॥

# बागेश्री, तिताला, मात्रा १६

## स्थाई

१ × ३ ० —ताल

रे म प ध निक धनिक - म प ध म गक गक रे स

बा गे श्री ई रा गि नी —ध्ह र त च तु र म न

## अन्तरा

रे म प ध म म प प ध ध निक निक गंक रें सं निक

ती ई व र रे ध ग नि को ओ म ल ला आ ग त

ध निक म ध निक - ध म गक रे स - म गक रे स

मु ख्य सु र म —ध्य म मा न त — गु नि ज न

# भीमपलासी, झपताल, मात्रा १०

## ठाठ

आरोह—स गक म प निक सं

अवरोह—सं निक ध प गक रे स

दोहा— मृदु ग, नि अरू शुद्ध सबै. तज धैवत आरोह।
स, प सम्वादी बादि हैं. भीम पलासी वह ॥

## गीत

स्थाई— भीम पलासी सब ही मन भावत ॥

अन्तरा (१) अए सो मधुर राग विरलय जानत।
ग, नी सो कोमल, सब शुद्ध लागत ॥

अन्तरा (२) पंचम वादी स्वर गुनि जन मानत।
त्रीतिय पहर दिन सब जन गावत ॥

# भीमपलासी, झपताल, मात्रा १०

स्थाई

| × | | ३ | | | ० | | १ | —ताल | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निक | स | स | प | प | ध | म | प | — | प |
| भी | ई | म | अ | प | ला | आ | सी | — | स |
| गक | म | प | निक | प | गक | रे | स | — | रे |
| ब | ही | म | अ | न | भा | आ | व | — | त |

अन्तरा

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | म | गक | — | म | पं | निक | सं | — | सं |
| अ | ए | सो | — | म | धु | र | रा | — | ग |
| निक | सं | गंक | रें | सं | निक | ध | प | — | प |
| वि | र | ल | अ | य | जा | आ | न | — | त |
| सं | — | निक | रें | सं | निक | ध | प | — | प |
| ग | — | नि | इ | सों | को | ओ | म | — | ल |
| गक | म | प | ध | प | म | गक | रे | स | रे |
| स | ब | शु | उ | द्ध | ला | आ | ग | अ | त |

अं० ( २ ) भी इसी में निकलगा ।

---

# कान्हेड़ा, एकताला, मात्रा १२

ठाठ

आरोह—स रे गक म प निक नि सं

अवरोह—सं निक नि ध प म गक रे स

दोहा— दोऊ निषाद कोमल ग, तीखे रे, है बादि ।
चढ़त ध, लागत नहीं, स, म, समझहु सम्बादि ॥

गीत

स्थाई — जय जय जय जन्म भूमि,
जननी मम प्यारी ॥

अन्तरा ( १ ) जल की जहाँ बहत धार,
डोलत शीतल बयार,
गिरि बन शोभा अपार,
अनुपम छवि वारी ॥

अन्तरा ( २ ) उपजत जहँ विपुल धान,
केसर फल फूल पान,
पक्षीगन करत गान,
हरषित नर नारी ॥

अन्तरा ( ३ ) प्रगटे जहाँ जनक राय,
त्रिभुवन यश रह्यो छाय,
ह्वै विदेह सब बिहाय,
ज्ञानी अति भारी ॥

अन्तरा ( ४ ) चन्द्रगुप्त नृप महान,
चानक सम नीतिमान,
भये जहाँ गुन निधान,
जाऊँ बलिहारी ॥

# कान्हेड़ा, एकताला, मात्रा १२

स्थाई

| ३ | | १ | | २ | | × | | ० | | १-ताल | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नि़ | स | रे | रे | पम | प | गक | — | म | रे | — | स |
| ज | य | ज | य | ज | य | जं | — | म | भू | — | मि |
| | | | | | | | | | क | क | क |
| म | म | प | — | ध | प | मप | धप | मप | गम | गरे | गरे |
| ज | न | नी | — | म | म | प्यारा | आआ | आआ | आआ | री ई | ईई ईई |

अन्तरा

म म प — नि नि सं गंक रें सं — सं
ज ल की — ज हाँ ब ह त धा — र

नि सं सं रें सं — नि रें सं निक — निक
डो ओ ल त शी — त ल ब या — र

ध ध निक ध प — म प सं सं — सं
गि रि ब न शो — भा आ अ पा — र

निक ध निक ध प प | मप धप मप गम गरे गरे
(क क क)
अ नु प म छ बि | वाआ आआ आआ रीई ईई ईई

अं० (२), (३), व (४) इसी सरगम में निकलेंगे ।

# छाया, तिताला, मात्रा १६

ठाठ

आरोह—स रे ग मत म प ध नि सं
अवरोह—सं निक नि ध प म ग रे स

दोहा— द्वै मध्यम हि निषाद द्वै, प, रे सम्वाद जु माहि ।
केदारा को भ्रम लसै, छाया कहते ताहि ॥

गीत

स्थाई— रही रही के उठत मेरे हिया में पीर,
मेरो धरत नाहि मन तनक धीर ।

अन्तरा — प्रेम विवश तव सब जन त्यागे,
नींद न आई दिन रात सारी जागे,
प्रभू के बिन कछु नीको न लागे ।
ज्योति 'किरण' बिना नयन अधीर ॥

# छाया, तिताला, मात्रा १६

स्थाई

ताल- ० १ × ३

क ते

ग ग म नि ध प म प, ध प म ग म रे — स

र ही र ही के उ ठ त मे रे हि या में पी — र

क

स नि स ग म प — प नि नि सं रें सं नि ध प

मे रो ध र त ना — हिं म न त न क धी ई र

अन्तरा

— — प — प प ध ध नि नि सं सं सं रें सं नि

— — प्रे — म वि व श त व स ब ज न त्या आ

सं — नि — नि नि नि नि ध नि सं रें नि सं ध नि

गे — नीं — द न आ ई दि न रा त सा री जा आ

क

प — म ग ग म प — नि नि सं रें नि सं ध नि

गे — प्र भू के बि ना — क छु नी ई को न ला आ

क क

प — नि — नि नि सं सं प ध नि रें सं नि ध प

गे — ज्यो — ति कि र ण वि ना न य न अ धी र

---

# सारंग, ताल कहरवा, मात्रा ८

ठाठ

आरोह— स रे म प ध नि सं

अवरोह—सं नि ध प म रे स

दोहा— म, कोमल तीखे ध, रे, नि, जँह बरजे गन्धार ।
प, रे, सम्बादी बादि हैं, सारंग कर निर्धार ॥

## गीत

स्थाई — सर सर हंस न होत,
बाजि गज राज न घर घर ॥
अन्तरा ( १ ) तर तर सुफर न होत,
नारिव्रता कोई न घर घर ॥
अन्तरा ( २ ) तन तन सुमति न होत,
मलै गिरि होत न बन बन ॥
अन्तरा ( ३ ) फन फन मणि नहिं होत,
मुक्ता जल होत न घन घन ॥

# सारंग, ताल कहरवा, मात्रा ८

### स्थाई

| × | | ३ | | ० | | १ —ताल | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प़ | प़ | नि़ | नि़ | नि़ | स | रे | स |
| स | र | स | र | ह | अं | स | न |
| रे | — | रे | रे | — | रे | प | प |
| हो | — | त | बा | — | जि | ग | ज |
| म | — | रे | स | रे | रे | स | स |
| रा | — | ज | न | घ | र | ध | र |

### अन्तरा

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रे | स | रे | रे | म | म | प | प |
| त | र | त | र | सु | फ | र | न |
| म | — | म | प | म | ध | प | म |
| हो | — | त | ना | रि | इ | ब्र | त |
| रे | नि़ | स | रे | रे | स | स | — |
| ता | इ | न | ध | र | ध | र | — |

अ० (२) व (३) इसी सरगम में निकलेंगे ।

# झिंझौटी, ठुमरी, मात्रा १६

ठाठ

आरोह— स रे ग म प ध सं

अवरोह—सं निक ध प म ग रे स

दोहा— कोमल म, नि, झिंझौटि है, चढ़त न लगे निषाद।
है धैवत सम्बादि सुर, अरु गन्धार है बाद॥

गीत

स्थाई — ओंकार भजो अहंकार तजो,
पछतावो नहीं जो भई सो भई॥

अन्तरा (१) पर का दुःख देख सहाय करो,
बिगरे नहीं धर्म उपाय करो,
करनी शुभ औसर पाय करो,
अब लों तुम नींद लई सो लई॥

अन्तरा (२) अविचार अनीति तजो मन से,
मद मस्त रहो मत यौवन से,
उपकार करो तन मन धन से,
इतनी वय बीत गई सो गई।

# झिंझौटी, ठुमरी, मात्रा १६

स्थाई

ताल— ० १ × ३

स रे स — स म ग — ग ग म — प प प —
ओं ओं का — र भ जो — अ हं का — र त जो —

म ग म — प प प — सं निक ध — प म ग —
प छ ता — वो न हीं — जो भ ई — सो भ ई —

अन्तरा

म ग म – म निक ध – ध ध निक – ध ध प –
प र का — दु ख दे — ख स हा — य क रो —

म ग म – प प प – सं निक ध – प म ग –
वि ग रे — न हीं ध — मैं उ पा — य क रो —

म रे स – स म ग – ग ग म – प प प –
क र नी — शु भ औ — स र पा — य क रो —

म ग म – प प प – सं निक ध – प म ग –
अ ब लों — तु म नीं — द ल ई — सो ल ई —

अं० ( २ ) भी इसी सरगम में निकलेगा ।

# धुनि रामायण, ताल जलद कहरवा

चौपाई ( १ )— रहा एक दिन अवध अधारा ।
समझत मन दुख भयउ अपारा ॥

( २ ) अहो धन्य लक्षमण बड़ भागी ।
राम पदार बिन्दु अनुरागी ॥

( ३ ) कपटी कुटिल नाथ मोहिं चीन्हा ।
ताते नाथ संग नहि लीन्हा ॥

( ४ ) जो करनी समझे प्रभु मारी ।
नहि निस्तार कल्प सत कोरी ॥

( ५ ) रघु बंशिन कर सहज सुभाऊ ।
मन कुपंथ पग धरे न काऊ ॥

( ६ ) मोहि अतिशय प्रतीत जिय केरी ।
जेहि सपनेहु पर नारि न हेरी ॥

# धुनि रामायण, ताल जलद कहरवा

### स्थाई

× ० × ०
प प – प ध प म म ग म ग रे स
र हा — ए ए क दि ऊ अ व ध अ धा

रे ग म ग रे स –
आ आ आ रा आ आ —

### अन्तरा

स रे रे रे ग म प ग म ग रे स
सम झ त म न दु ख भ ए उ अ पा

रे ग म ग रे स – –
आ आ आ रा आ आ — —

चौपाई २, ३, ४, इत्यादि सब इसी सरगम में बजेंगे।

---

# भजन, दादरा

### गीत

स्थाई— दीना नाथ तुम्हारा सहारा हमें।
यहाँ सूझे न कोई हमारा हमें॥

अन्तरा (१) अपने स्वारथ के सब साथी।
यहाँ दीखे न कोई दिलदारा हमें॥

अन्तरा (२) पड़ी भँवर विच नैया पुरानी।
कीजे प्रभू अब पारा हमें॥

अन्तरा ( ६ ) पतित उद्धार कहाय जगत में ।
फिर क्यों हाय बिसारा हमें ॥

अन्तरा ( ४ ) काम क्रोध अरु लोभ मोह ने ।
सब विधि नाथ बिगारा हमें ॥

अन्तरा ( ५ ) कुछ यह दास और नहीं चाहे ।
बस काफ़ी तुम्हारा नज़ारा हमें

# भजन, दादरा

## स्थाई

ताल- × ०

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| म | नि़ | स | रे | — | रे | रे | ग |
| दी | ना | ना | थ | — | तुम | हा | आ |
| रे | ग | म | ध | प | म | ग | — |
| रा | स | हा | आ | रा | ह | में | — |
| ग | म | प | प | — | प | प | म |
| य | हाँ | सू | झे | — | न | को | ई |
| — | ग | म | ध | प | म | ग | — |
| — | ह | मा | आ | रा | ह | में | — |

## अन्तरा

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| म | ग | म | प | ध | मत | प | — |
| अ | प | ने | स्वा | आ | र | थ | — |
| नि | — | नि | सं | ध | नि | प | — |
| के | — | स | ब | सा | आ | थी | — |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग | म | नि | नि | — | नि | सं | सं |
| य | हाँ | दी | खे | — | न | को | ई |
| — | प | निक | ध, | प | म | ग | -- |
| — | दिल | दा | आ | रा | ह | में | — |

अन्तरे २, ३, ४, व ५ इसी सरगम में निकलेंगे।

# थियेटर, दादरा

## गीत

स्थाई-- भारत में कैसे कैसे हुये बीर।
जिन्होंने आन बान पै, जिन्होंने एक जुबान पै,
तजा शरीर॥

अन्तरा (१) भारत निवासी की सम्पत थी दासी,
विद्या थी सब घट में बासी,
लाख विपत आन पड़े तौ भी रखते थे धीर॥

अन्तरा (२) कह दी जो बात, वह तन के साथ,
चाहे ज़माना, हो जाय बेगाना,
तन मन धन वारि देत,
तौभी न होते अधीर॥

# थियेटर, दादरा

## स्थाई

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | × | |
| नि | नि | सं | नि | रें | सं | निक | ध | प | म | ग | — |
| भा | रत | में | कै | से | कै | से | ए | हु | ये | बीर | — |
| म | ग | रे | स | रे | ग | प | म | प | ग | रे | स |
| जि | न्हों | ने | आ | न | बा | न | पै | ज़ि | न्हों | ने | एक |

रे ग प म प ग ग — रे स — —
जु बा न पै ऐ त जा — श री — र

ध ध — ध ध ध — ध ध ध — प
भा रत — नि वा सी — की सं पत — थी

ध सं नि सं ध — निक — ध प ग म
दा आ सी ई वि — द्यो — थी सब घट में

प ध निक ध प —
वा आ आ आ सी —

नि — नि नि नि — सं — सं सं सं —
ला — ख वि पत — आ — न प ड़े —

नि सं — नि | रेंसं निक | धप म — | ग — —
तौ भी — रख ते ए थे ए — धीर — —

अन्तरा (२)

ध निक — ध ध — ध ध — प ध सं
कह दी — जो बा त वो तन — के सा आ

नि सं नि नि सं ध नि प — नि नि सं
आ थ चा हे ज मा आ ना — हो जाए वे

ध नि प — नि नि — नि सं नि सं सं
रा आ ना — तन मन — धन वा री दे त

— नि सं — नि सं निक ध प ग — —
— तौ भी — न हो ते ए अ धीर — —

# गज़ल, कौवाली, मात्रा १६

## गीत

स्थाई (१) न पीछे लौटेंगे याद रक्खो,
क़दम जो आगे बढ़ा चुके हैं।

स्थाई (२) हज़ारों गो मुशकिलें पड़े अब,
हम अपना धीरज बँधा चुके हैं॥

अन्तरा (१) हज़ार परदों में ढूंढ़ करके,
किसी को अपना बना चुके हैं।
लगन थी जिसकी हमारे दिल में,
उसी में खुद को मिला चुके हैं॥

अन्तरा (२) कभी न भूलेंगे तुझको दिलवर,
यही क़सम तो हम खा चुके हैं।
उन्हीं के हाथों है मुन्सफी अब,
हम अपनी गर्दन झुका चुके हैं॥

अन्तरा (३) हमें न महलों मकाँ की ख्वाहिश,
हम अपना मन्दिर सजा चुके हैं।
महव हुये हैं यहाँ तलक हम,
कि अपना आपा भुला चुके हैं॥

अन्तरा (४) लो खुलासा ही कह रहा हूँ,
अपने गुरु को हम पा चुके हैं।
न मैल आने की अब जगह है,
हम अपनी पोशिश धुला चुके हैं॥

अन्तरा (५) वह हम को दिल से निभा चुके हैं,
हम उनको दिल में बसा चुके हैं।
प्रेम वश वह प्रेम की अस्फुट,
'किरण' को अपनी दिखा चुके हैं॥

# गज़ल, कौवाली, मात्रा १६

## स्थाई

० १ × ३ ताल

म म – म म – म – ग प – म ग – रे –
न पी — छे लौ — टें — गे या — द र — क्खो —

ग प – प ध – सं – प ध – प ग प म –
क़ दम — जो आ — गे — ब ढ़ा — चु के हैं एं —

स्थाई (२) इसी सरगम में निकलेगा ।

## अन्तरा

नि नि – नि नि – नि – सं सं – नि रें – सं –
ह ज़ा — र पर — दों — में ढूं — ढ़ कर — के —

निंक ध – प ध – सं – प ध – प ग प म –
कि सी — को अप — ना — ब ना — चु के ए हैं —

म म – म म – म – ग प – म ग – रे –
ल गन — थी जिस — की — ह मा — रे दिल — में —

ग प – प ध – सं – प ध – प ग प म –
उ सी — में खुद — को — मि ला — चु के ए हैं —

अन्तरे २, ३, ४, व ५ इसी सरगम में निकलेंगे ।

# भजन, ठुमरी, मात्रा १६

## गीत

स्थाई (१) शरणागत पालि कृपाल प्रभू,
हम को इक आस तुम्हारी है ।
स्थाई (२) तुम्हरे सम दूसर और नहीं,
कोउ दीनन को हितकारी है ॥
अन्तरा (१) सुध लेत सदा सब जीवन की,
अति ही करुणा उरधारी है ॥
प्रतिपाल करै बिन ही बदले,
अस कौन पिता महतारी है ॥
अन्तरा (२) जब नाथ दया करि देखत हो,
छुटि जात विथा संसारी है ॥
बिसराइ तुम्हे सुख चाहत जो,
अस कौन नदान अनारी है ॥

# भजन, ठुमरी, मात्रा १६

## स्थाई (१) व (२)

ताल— ० १ × ३

सं रे स — स म ग — ग ग म — प प प —
श र णा — ग त पा — ल कृ पा — ल प्र भू —
तु म्ह रे — स म दू — स र औ — र न हीं —

म ग म — प प प — सं नि ध — प म ग —
ह म को — इ क आ — स तु म्हा — री ई है —
को उ दी — न न को — हि त का — री ई है —

अन्तरा

म ग म — म निक ध — ध ध निक — ध ध प —
सु ध ले — त स दा — स व जी — व न को —

म ग म — प प प — सं निक ध — प म ग —
अ ति ही — क रु णा — उ र धा — री ई है —

स रे स — स म ग — ग ग म — प प प —
प्र ति पा — ल क रै — बि न ही — ब द ले —

म ग म — प प प — सं निक ध — प म ग —
अ स कौ — न पि ता — म ह ता — री ई है —

अन्तरा ( २ ) इसी सरगम में निकलेगा ।

---

# गत इमन कल्यान, तिताला, मात्रा १६

ताल- ० १ × ३
सं सं नि — ध ध प मत प — प — ग — ग —
ग ग रे — ग रे ग ध प — रे — नि़ रे स —
ग रे ग — स स रे — स — ध़ — ध़ ध़ रे —
रे — रे — ग रे ग ध प — रे — नि़ रे स —
तोड़ा (१) सं सं नि — ध ध प मत प —

स रे ग मत प ध नि सं,
सं नि ध प मत ग रे स,
प ध प मत ग रे……गत

तोड़ा (२) सं सं नि — ध ध प मत प —
गं रें सं नि, रें सं नि ध, सं नि ध प,
नि ध प मत, प ध प मत ग रे……गत

तोड़ा (३) सं सं नि — ध ध प मत प —
स रे ग मत, रे ग मत प ग मत प ध,
मत प ध नि, प ध प मत ग रे……गत

तोड़ा (४) सं सं नि — ध ध प मत प —
ध़ ध़ सनि़ स, रे रे ग ग, पमत प ध ध,
नि नि सं —, प ध प मत ग रे……गत

तोड़ा (५) सं सं नि — ध ध प मत प —
सं सं — रें, सं नि ध प, प ध नि सं,
नि ध प मत, प ध प मत ग रे……गत

## The National Anthem.

अर्थात्

# राजभक्ति भजन

स्थाई — हे जगदीश्वर, हम पे दया कर,
माँगत योंही बर, तव ही दुआरे ॥

अन्तरा (१) — किंग अरू क्वीन के, बढ़े आयु प्रति दिन,
जिये लाख बरषन, सह परिवारे ॥

अन्तरा (२) जब लौं सूरज करै, निज कारज,
तब लौं राज्य, ब्रिटिश करै रे ॥

अन्तरा (३) सूर्य 'किरण' जहाँ पहुंचै ब्रिटिश तहाँ,
छूटे न कोई जहाँ सगरो विस्तारे ॥

# राजभक्ति भजन

स्थाई

१ × ३ ० —ताल

स रे स म ग — ग ग म — प प प — म ग
हे प ज ग दी — श्व र हम — पे द या — क र

म — प प प ध सं नि॰ध ध प म प म ग —
मां — ग त या ही व र त ब हो दु आ आ रे —

अन्तरा

म प म नि॰ध ध ध ध नि॰ध नि॰सं नि॰ध प ध
किं ग अ रु कु इ न के व ढ़े आ यू प्र ति दि न

म म प प प ध सं नि॰ध ध प म प म ग --
जि ये ला ख व र स न म ह प रि वा आ रे —

अन्तरे २, व ३ इसी सरगम में निकलेंगे ।

॥ प्रथम भाग समाप्त ॥

पुस्तक मिलने का पता—

किरणकुमार मुखोपाध्याय
( नीलू बाबू )
यूनीवर्सिटी रोड, इलाहाबाद ।

गुरुचरण के प्रबन्ध से यूनियन जॉब प्रेस, प्रयाग में छपा

॥ करोड़पती बन बैठो ॥

( लाखों रुपयों का छिपा हुआ व्यापार )

# "शिल्प कला"

इस पुस्तक में भारतवर्ष के अतरिक्त अमेरिका, जर्मनी, जापान बिलायत आदि देशों के चुने हुये अलभ्य तथा गुप्त व फ़ैनसी और पेटेन्ट नुसखों का अपूर्व संग्रह किया गया है, इसके एक ही नुसखे, के व्यापार से मनुष्य थोड़ी ही पूञ्जी और थोड़े ही दिनों में एक भारी धनवान् बन सक्ता है अब इस पुस्तक की बहुत थोड़ी ही सी कापियाँ दफ़्तर में बची हैं, दाम एक पुस्तक का ५) रु० डाक ख़र्च अलहदा।

पता :—

मैनेजर दी कङ्करर प्रेस,
कटरा, इलाहाबाद।

पुस्तक मिलने का पता :—

पं० प्यारेलाल गौड़
परफ्यूमर एन्ड बुकसेलर
कटरा, इलाहाबाद।

# नीलू बाबू की बनाई हुई

## किताबों की सूची

१–शिक्षक संगीत-सार-संग्रह प्रथम भाग–१।) डाक ख़र्च अलग

२-शिक्षक संगीत-सार-संग्रह दूसरा भाग-१।।।) ,, ,,

३-चित्र-संगीत शिक्षक* हर एक राग का मूल्य-।) ,, ,,

(अर्थात् बिना किसी सहायता के, छोटे बच्चे से लेकर बूढ़े तक इस चित्र-संगीत को देखकर हारमोनियम पर ताल और स्वर के साथ हर एक राग रागनी आसानी से गा और बजा सकते हैं। हारमोनियम सीखने के लिये यह बहुत ही सरल और नया ढङ्ग अनेक परिश्रम से निकाला गया है। इसको अङ्गरेज़ी में Touch-System कहते हैं, जिसमें स्वर-लिपि इत्यादि का प्रयोग कुछ भी नहीं है। परदा-नशीन औरतों को जहाँ कोई सिखाने वाला नहीं जा सकता संगीत सीखने के लिये ख़ास तौर पर लाभदायक है।)

४-संगीत-संग्रह (भारतीय-रस) ... =) डाक ख़र्च अलग

प्रचलित रागों में हर प्रकार के स्वदेश-प्रेम के गानो का संग्रह।

५-संगीत-संग्रह (भक्ति-रस) ... =) डाक ख़र्च अलग

प्रचलित रागों में चुने हुये सब प्रकार के भजनों का संग्रह।

६-संगीत संग्रह (प्रेम-रस)* ... ।।=) डाक ख़र्च अलग

प्रचलित रागों में चुने हुये सब प्रकार के गानों का संग्रह।

७-गत-संग्रह* (इसमें २५ रागों के अलग २ गत हैं।।) डा० अलग

८-घर का डाक्टर* ... ... ।।) डाक ख़र्च अलग

(इसमें हर प्रकार के रोगों को घरेलू चीज़ों से अच्छे करने के चुटकुले "नुसख़े" बतलाये गये हैं। यह प्रत्येक घर में रखने योग्य है।

*यह किताबें बहुत जल्द छपकर निकलने वाली हैं।

पुस्तक मिलने का पता :—

पं० प्यारेलाल गौड़

परफ्यूमर एन्ड बुकसेलर

कटरा, इलाहाबाद।

THE UNION JOB PRESS,
KATRA, ALLAHABAD.